



हवामहल

अंक-10



नाहरगढ़ बावड़ी, जयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर

संयोजक : कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर



अर्चना गुर्जर

महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान
एवं अध्यक्ष नराकास (का-1) जयपुर

*** संरक्षक की कलम से ***

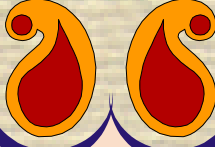
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की इस वार्षिक हिन्दी पत्रिका के दसवें अंक के प्रकाशन हेतु आप सबको बहुत बहुत बधाई।

गत लगभग 41 वर्षों से आप और हम नराकास की छमाही बैठकों के माध्यम से जुड़े हुए हैं और राजकाज में हिन्दी के प्रयोग पर अच्छा काम कर रहे हैं। मेरा ऐसा मानना है कि चाहे भाव हों या भाषा, जो हमारे मन के निकट होता है उससे हमारा एक रिश्ता बन जाता है। “राजभाषा हिन्दी” भी हम सबके अंदर रची बसी भाषा है क्योंकि यह एक बेहद सहज, सरल भाषा है। जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है इसलिए यह भाषा हमारे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय है। हमारे देश में जब भी कोई विदेशी अपने कार्यवश लंबे समय के लिए आता है तो वो सबसे पहले “हिन्दी” को सीखता है क्योंकि वो यह जानता है कि यदि इस देश में सहज जीवन जीना है तो हिन्दी तो आनी ही चाहिए। “मैथिलीशरण गुप्त” जी का भी मानना है कि—

“हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर यह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।”

इस पत्रिका के माध्यम से भी आप सभी पाठक एवं रचनाकार भी हिन्दी के प्रचार प्रसार में जो योगदान दे रहे हैं वह अतुलनीय है इसके लिए मेरी ओर से आप सभी को साधुवाद।

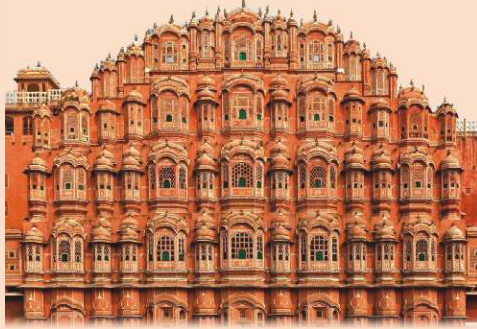
अर्चना गुर्जर



सत्यमेव जयते

हवामहल

(वार्षिक हिंदी पत्रिका)



दशम् अंक

* वर्ष 2021-22

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर

संयोजक :

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर

दशम् अंक
वर्ष 2021-22
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर
संयोजक
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान, जयपुर

संपादक मंडल



* संरक्षक *

श्रीमती अर्चना गुर्जर

महालेखाकार (लेखा व हकदारी) राजस्थान
एवं अध्यक्ष नराकास (का-1) जयपुर



परामर्शदाता

श्री सोहन लाल साहू

वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)
एवं सचिव नराकास (का-1)



प्रधान संपादक

श्री महेन्द्र सिंह

वरिष्ठ लेखाधिकारी



श्रीमती रीतिका मोहन
हिन्दी अधिकारी
संपादक



श्री ओम प्रकाश पारीक
सहायक लेखाधिकारी
संपादक



श्रीमती सुनीता दुआ, सहायक निदेशक
कार्यालय प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त
संपादक



डॉ. वी.आर. मीणा
प्रभारी सहायक निदेशक
क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर
संपादक



श्री राजेश कुमार मीना
प्रभारी सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रसार भारती, आकाशवाणी
संपादक

**भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, जयपुर
में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह
के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं एवं
समापन समारोह की झलकियां**



**कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल,
जयपुर में आयोजित
हिन्दी दिवस समारोह-2021 की झलकियां**



कार्यालय महालेखाकार परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह सितम्बर, 2021 की झलकियां

हिन्दी दिवस समारोह (14 सितम्बर, 2021) के शुभारम्भ के अवसर पर
मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए कार्यालय प्रमुख



हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर 'राजभाषा प्रतिज्ञा' लेते हुए कार्यालय प्रमुख, उच्चाधिकारीगण एवं कार्मिक



हिन्दी समारोह का आनन्द लेते हुए दर्शकगण



अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
	संरक्षक की कलम से		
	संपादकीय		3
	आपके पत्र		4
	गृहमंत्री का संदेश		12
1.	महात्मा गांधी : एक अवलोकन	लेख	रीतिका मोहन 16
2.	अमर शहीद पंडित गेंदालाल दीक्षित	लेख	ओम प्रकाश पारीक 18
3.	अहसास	कविता	मनोज कुमार 21
4.	हे ईश्वर आपने मुझे सद्बुद्धि दी	वृत्तांत	प्रदीप कुमार चौधरी 23
5.	मेरी जिद	कविता	डॉ. गोविन्द सिंह मीना 25
6.	सिर्फ उनके लिए	कविता	राजेश कुमार जांगिड़ 27
7.	गज़ल	कविता	रामानन्द 28
8.	चोखो ना लागे	कविता	मदन लाल कोली 29
9.	युवाओं की सफलता का राजमार्ग है – सकारात्मक सोच	लेख	पदम चन्द गाँधी 30
10.	सत्य साईं बाबा : एक महान अवतार	कविता	बनवारी लाल सोनी 32
11.	दधीचि का अस्थिदान	कहानी	संकलन- बालकृष्ण शर्मा 35
12.	सत्य का महत्व	कविता	संकलन- इति शर्मा 40
13.	यह रागी हुई अभागी क्यों?	कविता	संकलन : एस.के. सिंह 42



- | | | | | |
|-----|--|-------|--------------------|----|
| 14. | दो राजा | कहानी | संकलन- सुशील शर्मा | 44 |
| 15. | दिनांक 26.08.2021 को ऑनलाईन
(वीडियो कान्फ्रेंसिंग) आयोजित
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की
81वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का कार्यवृत्त | | राजभाषा कक्ष | 47 |
| 16. | दिनांक 31.01.2022 को ऑनलाईन
(वीडियो कान्फ्रेंसिंग) आयोजित
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की
82वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का कार्यवृत्त | | राजभाषा कक्ष | 51 |
| 17. | नराकास (का-1) जयपुर के विभिन्न सदस्य कार्यालयों
से प्राप्त हिन्दी समारोह-2021 की रिपोर्ट
(i) कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर
(ii) कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर
(iii) कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर
(iv) कार्यालय प्रधान निदेशक (केन्द्रीय) अहमदाबाद, शाखा कार्यालय, जयपुर
(v) भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, जयपुर
(vi) कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, जयपुर | | | 55 |

मुख व अंतिम पृष्ठ के छायाकार

देवराज खत्री

‘हवामहल’ पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं है कि नराकास (का-1) जयपुर के संपादक मंडल की उनसे सहमति हो, अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए नराकास (का-1) जयपुर का संपादक मंडल किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी रचनाकार स्वयं उत्तरदायी है।



सम्पादकीय

समय जैसे पंख लगा कर उड़ने लगा और देखते ही देखते आपकी वार्षिक हिन्दी पत्रिका “हवामहल” का 10वां अंक भी आप सभी के सहयोग से प्रकाशित हो गया जिसे आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार खुशी का अहसास हो रहा है। यह अहसास उस अहसास से बिल्कुल भी कम नहीं है जो अपने शिशु को धीरे-धीरे पग बढ़ाते हुए बड़े होते हुए देखने पर होता है। शिशु को विकास की सही दिशा देने में उसके माता-पिता की अहम भूमिका होती है उसी तरह इस पत्रिका के पुष्पित और पल्लवित होने में और विकास की सही दिशा दे पाने में, सबके पसंद की पत्रिका बनाने में निश्चित ही आप ज्ञानी रचनाकारों एवं सुधि पाठकों की अहम भूमिका है जिसके लिए आप सभी का हार्दिक आभार।

मेरा यह व्यक्तिगत रूप से मानना है कि जीवन में हम अपनी कार्यालय, समाज व घर की जिम्मेदारियों को निभाते हुए यदि कुछ समय अपने उन अनुभवों को भी दें जिनसे हमने अपने जीवन में बहुत कुछ सीखा और यदि रचनाकार हैं तो रचना के माध्यम से अन्यथा एक सीधी सादी अभिव्यक्ति के रूप में भी अपने भावों को शब्दों में ढाल कर उसे अपनी इस पत्रिका में प्रकाशित करवाएं, इससे एक ओर तो हमारी इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु सामग्री भी प्राप्त होती रहेगी और आपकी सक्रिय सहभागिता भी रहेगी साथ ही अपनी रचना/अभिव्यक्ति को प्रकाशित देखकर एक अलौकिक खुशी का आभास भी निश्चित ही होगा।

आप अपनी इस पत्रिका को विभिन्न रचनाओं तथा अपनी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से भविष्य में भी सजाते संवारते रहें, ऐसी हमारी कामना व अपेक्षा है।

रीतिका मोहन

हिन्दी अधिकारी एवं संपादक



आपके पत्र

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम) मध्य प्रदेश, ग्वालियर

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका 'हवामहल' के 9 वें अंक की प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद। राजभाषा के प्रचार-प्रसार और कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने में आपकी पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र एवम् सभी रचनाएं अत्यंत ज्ञानवर्धक, नीतिपरक, एवम् रोचक हैं। कवितायें तथा लेख भावपूर्ण, सार्थक व मन को छू लेने वाले हैं। पत्रिका प्रकाशन में आपका कार्य अत्यंत सराहनीय है।

पत्रिका में समाहित रचनाएं यथा श्री रामानन्द जी की 'गजल' गीतात्मक गुणों से परिपूर्ण व भावात्मक है, श्री मदन लाल कोली की 'हम भारत के लेखाकार' लेखाकारों के कार्यों का जीवंत चित्र प्रस्तुत करती है, श्री भारत भूषण शर्मा की 'कल्पना' बेहद भावपूर्ण एवं हृदयस्पर्शी है तथा सुश्री कविता घरबारिया की 'प्रदूषण' वर्तमान परिदृश्य की समस्या को उजागर करते हुए पाठकों को जागरूक करती है। उक्त रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय हैं। पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों के सफल संपादन एवम् लगातार प्रकाशन के लिये हार्दिक बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की मंगलकामनाओं के साथ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)-II, महाराष्ट्र

इस कार्यालय में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी वार्षिक पत्रिका 'हवामहल' का 9वां अंक(वर्ष-2020-21) प्राप्त हुआ है तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका का मुख पृष्ठ व साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका की बाहरी व भीतरी साज-सज्जा पत्रिका को विशिष्ट बना रहे हैं। पत्रिका में शामिल रचनाएं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उसे बढ़ावा देने में अपना योगदान अवश्य प्रदान करेगी जो परिलक्षित हो रहा है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित लेख व कविताएं सरस, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। कार्यालय में संपन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है। पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी, राजभाषा अनुभाग



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका “हवामहल” के 9वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री गजेन्द्र सिंह जी की कविता ‘गुलाबी नगरी’, श्रीमती रीतिका मोहन जी का लेख ‘मेरी कर्मभूमि:— मेरा कार्यालय’, श्री रामानन्द जी की गजल ‘गजल’, श्री बनवारी लाल सोनी जी का लेख ‘श्री राम का अयोध्या जाने के लिए उद्धत होना’, श्री पदमचंद गांधी जी का लेख ‘बदलते मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ’, श्री भारत भूषण शर्मा जी की कहानी ‘कल्पना’ और श्रीमती कविता घरबारिया जी का लेख ‘प्रदूषण’ अत्यन्त ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका “हवामहल” इसी तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका ‘हवामहल’ के 9वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में द्रुत गति से अग्रसर होती प्रतीत हो रही हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ रोचक, उपयोगी, सराहनीय और ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर ‘सबक सिखाए जीवन’, ‘आत्ममंथन’, ‘मेरी कर्मभूमि : मेरा कार्यालय’, ‘बदलते मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ’ विशेष सराहनीय हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों के कार्यवृत्त की प्रस्तुति निश्चित रूप से सराहनीय हैं।

राजभाषा और लेखापरीक्षा संबंधी विषय पर महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं, जिससे राजभाषा के प्रति अनन्य स्नेह व लगाव पैदा होता है।

“कुरिंजि” परिवार ‘हवामहल’ के कुशल संपादन और उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं और संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयां देता है।

हार्दिक शुभकामनाएं ।

हिंदी अधिकारी



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़

आपकी कार्यालयी पत्रिका 'हवामहल' का नवीन संस्करण प्राप्त हुआ। आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं समान रूप से उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं। राजभाषा पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य कार्मिकों में राजभाषा के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने के साथ-साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति को बल देना होता है जो कि आपकी पत्रिका के प्रत्येक पृष्ठ से दृष्टिगोचर होती है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं अति उत्तम हैं जिसके लिए लेखकों के अतिरिक्त संपादक मंडल विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं। इसके अतिरिक्त नराकास (का-1) जयपुर द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के संबंध में किये जा रहे कार्य एवं प्रयास विशेष रूप से सहाहनीय है।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका 'हवामहल' के उज्ज्वल भविष्य के लिए 'सुगंधा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) हरियाणा

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका 'हवामहल' के 9वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री हर्षित मोहन की कहानी 'हकीकत', श्री भारत भूषण शर्मा की कहानी 'कल्पना' एवं श्री पदमचंद गांधी का लेख 'बदलते मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएं' बहुत ही ज्ञानवर्धक रचनाएं हैं।

इसके अतिरिक्त श्री गजेन्द्र सिंह की कविता 'गुलाबी नगरी', श्री राजेश कुमार जांगिड की कविता 'आत्ममंथन' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी



कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी वार्षिक पत्रिका 'हवामहल' के 9वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका में संकलित रचनाएं लेखकों के रचना-संसार के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली हैं। पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों के छायाचित्र आकर्षक हैं तथा संकलित रचनाओं की सादगी भी प्रशंसनीय है। यह अंक अपने कलेवर तथा साज सज्जा के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पुनः हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) मेघालय, शिलांग

आपके कार्यालय की हिंदी वार्षिक पत्रिका "हवामहल" के 9वें अंक की सहर्ष प्राप्ति हुई।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक तथा सुंदर है। पत्रिका में समाहित सभी कविता, कहानी, लेख व गज़ल उच्चकोटि की हैं। श्री गजेन्द्र सिंह द्वारा रचित 'गुलाबी नगरी', रामानंद द्वारा रचित 'गज़ल', श्री बनवारी लाल सोनी द्वारा रचित 'श्री राम का अयोध्या जाने के लिए उद्यत होना', पठनीय एवं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। पत्रिका कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग अभियान को सफलतापूर्वक निभा रही है। इसी शुभकामना सहित आपकी पत्रिका "हवामहल" के उज्ज्वल भविष्य हेतु "नवीन पूर्वांचल संदेश" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) बिहार, पटना

‘हवामहल’ के 9वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरीय लेखा अधिकारी, हिन्दी कक्ष

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास), नई दिल्ली

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में वार्षिक हिन्दी पत्रिका ‘हवामहल’ के 9वें अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। सुश्री रीतिका मोहन, हिन्दी अधिकारी का लेख ‘मेरी कर्मभूमि : मेरा कार्यालय’, सुश्री कविता घरबारिया का लेख ‘प्रदूषण’ अत्यंत ही प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय हैं। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभ कामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड, राँची

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी गृह ई-पत्रिका 'हवामहल' के 9वें अंक की ई प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित 'गुलाबी नगरी', 'मेरी कर्मभूमि: मेरा कार्यालय', 'प्रदूषण' आदि रचनाएँ एवं राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, हिन्दी प्रकोष्ठ

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) बिहार, पटना

आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'हवामहल' के 9वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस हेतु धन्यवाद एवं बधाई। पत्रिका समग्र रूप से अति आकर्षक एवं सुन्दर प्रतीत होती है। पत्रिका के आवरण-पृष्ठ में 'हवामहल' का अति मनोरम दृश्य पत्रिका के नाम को बखूबी चरितार्थ करता है।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ सुरुचिपूर्ण, सारगर्भित एवं पठनीय हैं। संकलित रचनाओं में 'गुलाबी नगरी', 'सबक सीखाए जीवन', 'बदलते मूल्य और सामाजिक अपेक्षाएँ' तथा 'कल्पना' विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं पठनीय हैं।

राजभाषा हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास एवं नराकास के सदस्य कार्यालयों के रचनाकारों की प्रतिभा को निखारने में 'हवामहल' पत्रिका का योगदान सराहनीय है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करे, इसी शुभकामना के साथ पुनः बधाई एवं धन्यवाद।

वरीय लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर से प्रकाशित हिन्दी वार्षिक पत्रिका 'हवामहल' के 9वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं विषयानुकूल हैं। पत्रिका के भीतर कार्यालयीन गतिविधियों के चित्रों ने इसे और भी आकर्षक बना दिया है। पत्रिका के द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ ही कार्यालय कर्मियों को मौलिक लेखन का मंच प्रदान किया गया है।

पत्रिका के कुशल संपादन व सहयोग हेतु सम्पादक मण्डल एवं रचनाकार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, राजभाषा अनुभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले व ह.) केरल, तिरुवनंतपुरम

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'हवामहल' के अष्टम अंक की प्राप्ति हुई है, धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं मन को लुभानेवाली हैं। श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल की कविता 'तमन्ना', श्रीमती गरिमा सिंह की कविता 'मेरी चाह', श्रीमती रीतिका मोहन की कविता 'ज़िन्दगी' एवं डॉ. सुमीत जैरथ जी का लेख 'राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन में दस 'प्र' की भूमिका' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि का बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं इस पत्रिका के संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका “हवामहल” का अष्टम अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद ।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा के उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी, हिंदी प्रकोष्ठ

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) उत्तराखण्ड

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका “हवामहल” का नवां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उतरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखाधिकारी, हिंदी प्रकोष्ठ





अमित शाह

AMIT SHAH

गृह और सहकारिता मंत्री

HOME & COOPERATION MINISTER

भारत सरकार

GOVERNMENT OF INDIA



प्रिय देशवासियों!

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

‘मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।’

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार



बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की



जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/विभागों/उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। 'ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ



देश ही नहीं बल्कि विदेश में रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम्!

नई दिल्ली, 14 सितंबर, 2021

अमित शाह



महात्मा गांधी : एक अवलोकन

रीतिका मोहन

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.)

राजस्थान, जयपुर



जैसा कि हम सभी जानते हैं कि महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबन्दर, गुजरात में हुआ था। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनके पिता का नाम करमचंद गांधी एवं मां का नाम पुतलीबाई था। उनके पिता राजकोट के दीवान थे।

महात्मा गांधी देश के लिए पूर्णतया से समर्पित थे। इन्होंने देश के लिए जो किया वो जग जाहिर है। इनके कार्यों की वजह से इनको बापू, महात्मा इत्यादि संबोधन दिए गए और ये राष्ट्रपिता कहलाए।

गांधीजी के पिताजी बेहद ईमानदार, अनुशासनप्रिय और कर्तव्यनिष्ठ थे। उनकी माताजी बेहद सरल स्वभाव वाली धार्मिक महिला थीं। मां बाप के ये गुण उनमें बचपन से ही आ गए थे। वे बेहद संस्कारशील थे। उनके संस्कारी होने का एक छोटा सा किस्सा यहां बताना चाहूंगी वो ये कि इनके घर के आंगन में एक कुआं था और कुएं के पास ही एक बड़ा पेड़ था। कुएं की वजह से बच्चों का पेड़ पर चढ़ना मना था लेकिन बापू को पेड़ पर चढ़ कर बैठना बहुत अच्छा लगता था। ऐसे ही एक दिन बापू पेड़ पर चढ़कर बैठ गए और मस्ती कर रहे थे तो उनके बड़े भाई ने देख लिया और उन्हें नीचे उतरने के लिए कहा लेकिन बापू नहीं माने तो उनके भाई ने खुद ऊपर चढ़ कर उन्हें खींच कर नीचे उतारा और एक थप्पड़ मार दिया, ये कहकर कि तुझे मना किया है न पेड़ पर चढ़ने के लिए, गिर जाए तो बहुत चोट लगेगी। थप्पड़ पड़ते ही बापू रोते हुए मां को आवाज लगाते हुए बोलने लगे, मां-मां मुझे भैया ने थप्पड़ मारा। गांधी जी की मां किसी काम में व्यस्त थीं, बाहर आ नहीं सकती थीं और बापू बार-बार चिल्ला कर मां को आवाज दिए जा रहे थे तो इस पर उन्होंने अन्दर से ही कहा कि तू भी अपने भाई को थप्पड़ मार दे। यह सुनते ही बापू दौड़ कर घर के अंदर मां के पास आ गए और बोले मां, ये आप क्या कह रहीं हैं? आपने तो सिखाया था कि अपने से बड़ों का सम्मान करते हैं फिर मैं अपने बड़े भाई को थप्पड़ कैसे मार सकता हूं। यह सुनते ही उनकी मां ने तुरन्त अपने हाथ का काम छोड़ कर गांधी जी को गले लगा लिया और बोली, शाबास बेटा, तुझे संस्कार देकर मैं भूल गई लेकिन तूने याद रखे ओर उन पर अमल किया। जिन्दगी भर ऐसा ही बना रहना।



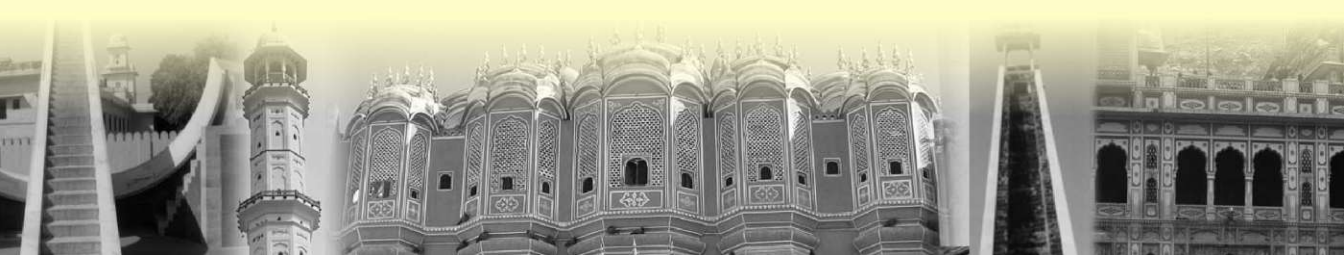
बापू देश के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। वे पूरे देश को ही अपना परिवार मानते थे और सम्पन्न परिवार के होकर भी सादा जीवन उच्च विचार रखते थे। उन्हें बच्चों से भी बहुत ही प्यार था। उन्हें जब भी समय मिलता था वे बच्चों के साथ समय बिताना पसन्द करते थे। एक बार वे बच्चों से घिरे हुए उनके बीच में बैठकर उनसे बातें कर रहे थे तो एक बच्चे ने उन्हें कहा कि बापू, आप धोती के ऊपर कुर्ता क्यों नहीं पहनते हो तो बापू ने मजाक में कहा कि मेरे पास है नहीं। बच्चा इस बात को सच मान कर गंभीर होकर बोला कि बापू, आप कहो तो अपनी मम्मी से सिलवा कर आपको कुर्ता दे दूं तो बापू बोले, ठीक है लेकिन तुम्हारी मम्मी कितने कुर्ते सिल कर देगी? तो बच्चा बोला, जितने आप कहो तो बापू बोले, मेरा परिवार बहुत बड़ा है, पूरा देश ही मेरा परिवार है, मेरे 40 करोड़ भाई बहन हैं तो क्या तुम्हारी मम्मी 40 करोड़ कुर्ते सिल कर देंगी। यह सुनकर बच्चा सोच में पड़ गया और कुछ जवाब नहीं दे पाया। सच में बापू हर समय देश के ही बारे में सोचते थे।

बचपन में अक्सर बच्चे अंधेरे से डरते हैं, बापू भी डरते थे। बचपन में एक बार बापू पड़ौस में अपने दोस्त के घर जाने से डर रहे थे क्योंकि अंधेरा था, यह देखकर उनकी दाई, रंभा ने पूछा कि क्या हुआ तब बापू ने कहा कि मुझे पड़ौस में अपने दोस्त के घर जाना है परन्तु मुझे अंधेरे से डर लगता है तो इस पर दाई मां बोली कि बेटा कभी भी डर लगे तो भगवान “राम” का नाम जपा करो, डर दूर भाग जायेगा। बापू ने उस समय ऐसा ही किया और अपने दोस्त के घर चले गए लेकिन उस दिन के बाद भी उन्होंने राम के नाम का साथ नहीं छोड़ा, यहां तक कि उनके अंतिम समय में भी उनके मुंह से जो दो शब्द निकले वो “हे राम” ही थे।

बापू ने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह के बल पर देश को आजाद कराने हेतु स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में हर जाति, हर धर्म के लोगों को शामिल किया और आजादी के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी! देश की आजादी में बापू की अहम भागीदारी से देशी ही नहीं बल्कि विदेशी भी इंकार नहीं कर सकते।

बापू, सत्यनिष्ठ, अहिंसावादी, सत्याग्रही, कर्तव्यनिष्ठ, ईमानदार, मेहनती, देशप्रेमी, भेदभाव से दूर, सादगी पसंद तथा सादा जीवन उच्च विचार से परिपूर्ण व्यक्तित्व थे। वे उपदेश देने में विश्वास नहीं करते थे बल्कि जो सामने वाले से अपेक्षा करते थे वो पहले खुद करते थे इसलिए इनके विचारों का सब पर बेहद असर होता था।

बापू, एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व थे जिनका नाम सदियों तक याद किया जाता रहेगा।



अमर शहीद पंडित गेंदालाल दीक्षित

ओम प्रकाश पारीक
सहायक लेखाधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान,
जयपुर



हमारे देश भारत को आजादी दिलाने में कई विचारधाराओं, संगठनों और व्यक्तियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं। एक ओर महात्मा गांधी के नेतृत्व में अहिंसक आंदोलन चल रहा था तो दूसरी ओर क्रांतिकारियों को लगता था कि स्वतंत्रता अंग्रेजों के आगे गिड़गिड़ाने या मांगने से नहीं मिलने वाली है, इसके लिये तो कड़ा संघर्ष ही एकमात्र रास्ता है एवं इसके लिये सर्वस्व न्यौछावर करना पड़ेगा। इसी विचार को लेकर महान क्रांतिकारी हुए हैं पंडित गेंदालाल दीक्षित, जिनके नाम से ही अंग्रेजी सत्ता कांपने लग जाती थी।

गेंदालाल दीक्षित का जन्म 30 नवम्बर, 1888 को आगरा के बेश्वर के पास एक छोटे से गाँव मई में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित भोलाराम दीक्षित था। इनकी माता का निधन तीन वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। इनका बचपन बिना रोकटोक के खेलकूद में ही बीता जिसके कारण इनकी प्रवृत्ति जुझारू हो गई और साहस इनकी रगरग में भर गया।

प्राथमिक शिक्षा गाँव के विद्यालय में ही हुई फिर इटावा से मिडिल और आगरा से मैट्रिकुलेशन किया। इसके बाद परिस्थितिवश उत्तर प्रदेश में औरैया जिले की डी ए वी पाठशाला में अध्यापन का कार्य किया। सन 1905 में बंगाल-विभाजन के बाद जो देशव्यापी स्वदेशी आंदोलन चला उससे ये अत्यधिक प्रभावित हुए और मैनपुरी में सन् 1915-16 में शिवाजी समिति के नाम से एक संगठन बनाया जिसमें चंबल के डाकुओं को भी सदस्य बनाया। इस समिति ने शिवाजी से प्रेरणा लेकर उत्तर प्रदेश में एक छापामार युद्ध से अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध अभियान प्रारम्भ किया। इस अभियान में कई प्रमुख क्रांतिकारियों जैसे मुकुन्दी लाल, दम्मीलाल, करोीलाल गुप्ता, सिद्ध गोपाल चतुर्वेदी, गोपीनाथ, प्रभाकर पाण्डे, चन्द्रधर जौहरी और शिव किशन आदि ने पण्डित गेंदालाल दीक्षित के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध काम करने के लिये उनकी संस्था शिवाजी समिति से हाथ मिलाया और एक नयी संस्था मातृवेदी की स्थापना की। मातृवेदी संगठन से नौजवानों को जोड़ने के लिए गेंदालाल दीक्षित ने संयुक्त प्रांत के कई शहरों का दौरा किया। इसके साथ ही संगठन के लिए उन्होंने आवश्यक धन एकत्रित किया। इनकी सुदृढ़ नेतृत्वक्षमता और अद्भुत संगठनिक कुशलता का ही परिणाम था कि एक समय मातृवेदी दल में दो हज़ार

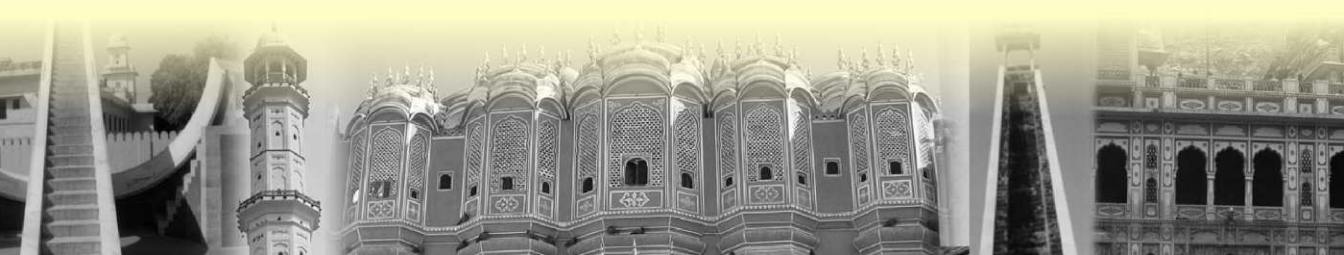


पैदल सैनिक के अलावा पाँच सौ घुड़सवार शामिल थे। इसके अतिरिक्त संयुक्त प्रांत के 40 जिलों में 4 हज़ार से ज़्यादा हथियारबंद नौजवान भी सदस्य बन गये थे। संगठन के खजाने में आठ लाख रुपए जमा हो गये थे। यह उल्लेखनीय है कि मातृवेदी दल की केन्द्रीय समिति में चंबल के 30 बागी सरदारों को भी महत्वपूर्ण जगह मिली हुई थी। देश के अलग-अलग हिस्सों में स्वतंत्रता के लिए काम कर रहे कई संगठनों और उनके नेताओं में जिसमें गेंदालाल दीक्षित भी शामिल थे, ने क्रांति की एक तारीख 21 फ़रवरी, 1915 निश्चित की। इस क्रांति में राजस्थान से 10 हज़ार सैनिकों का साथ मिलना भी तय हो गया था लेकिन एक गद्दार के कारण क्रांति की सारी योजना नाकाम हो गई। इस बगावत की सूचना अंग्रेज अधिकारियों को लग गयी और प्रमुख नेताओं को पकड़कर उनके विरुद्ध मैनपुरी में मुकदमा चला। इसे ही बाद में अंग्रेजों ने मैनपुरी षडयन्त्र कहा। कैद के दौरान आगरे के किले में राम प्रसाद बिस्मिल ने आकर दीक्षित जी से गुप्त रूप से मुलाकात की। दोनों ने सारा वार्तालाप संस्कृत में किया जिसे अंग्रेज पहरदार बिलकुल न समझ पाये। अगले दिन योजनानुसार पुलिस अधिकारियों से कुछ रहस्य की बातें बतलाने की इच्छा व्यक्त की। इसी कारण इन्हें आगरा से मैनपुरी भेज दिया गया। मैनपुरी के स्पेशल मैजिस्ट्रेट बी.एस. क्रिस की अदालत में गेंदालाल दीक्षित सहित सभी नवयुवकों पर सम्राट के विरुद्ध साजिश रचने का मुकदमा चला और इसी मुकदमे को भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में मैनपुरी षडयंत्र के नाम से जाना जाता है। उन्हें मैनपुरी षडयंत्र का सूत्रधार समझ कर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया किन्तु वे अपनी सूझबूझ और चालाकी से जेल से निकल भागे। एक सरकारी गवाह जिसे एक ही हथकड़ी में उनके साथ कैद कर रखा था उसको भी ले उड़े। पुलिस ने सारे हथकण्डे अपना लिये परन्तु उन्हें अन्त तक खोज नहीं पायी। आखिरकार कोर्ट को उन्हें फरार घोषित करके मुकदमे का फैसला सुनाना पड़ा।

कई क्रान्तिकारियों को अलग-अलग समय के लिये कठोर कारावास की सजा हुई। इस असफल क्रांति के बाद भी गेंदालाल दीक्षित की हिम्मत नहीं टूटी। वे सिंगापुर गए और गदर पार्टी के नेताओं के साथ मिलकर फिर नई रणनीति बनाई। बर्मा और शंघाई जाकर भी वहाँ काम कर रहे क्रान्तिकारी संगठनों से देश की आज़ादी के लिए समर्थन मांगा। उन्होंने संस्था को नये सिरे से खड़ा करने के लिए काफी मेहनत की लेकिन कामयाब नहीं हुए।

लगातार लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बिना विश्राम जी-तोड़ काम करते रहने के कारण उन्हें क्षय रोग हो गया था। धन के अभाव में परिवारजनों ने उन्हें दिल्ली के एक सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिया जहाँ इस अदम्य साहसी व्यक्ति ने तीस वर्ष की अल्पायु में ही 21 दिसम्बर 1920 को शरीर छोड़ दिया।

गेंदालाल दीक्षित की छोटी-सी जिंदगी बहुत रोमांचकारी रही। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अप्रतिम योद्धा, महान क्रान्तिकारी व उत्कट राष्ट्रभक्त थे। यह उनकी अद्भुत संगठनिक क्षमता का ही चमत्कार था कि आम आदमी की बात तो दूर, डाकुओं तक को संगठित करके ब्रिटिश साम्राज्य के



विरुद्ध खड़ा करने का सफल प्रयास किया। दीक्षित जी को उत्तर भारत के क्रांतिकारियों का द्रोणाचार्य कहा जा सकता है। क्रांतिकारी रास बिहारी बोस ने इस संस्था की प्रशंसा करते हुए लिखा था, 'संयुक्त प्रांत का यह संगठन भारत के सब प्रांतों से उत्तम, सुसंगठित तथा सुव्यवस्थित था। क्रांति के लिए जितने अच्छे रूप में इस प्रांत ने तैयारी कर ली थी, उतनी किसी अन्य प्रांत ने नहीं की थी।'

इस संगठन में शामिल सदस्यों को देश के लिए मर मिटने की शपथ लेनी पड़ती थी। 'भाइयों, आगे बढ़ो, फोर्ट विलियम छीन लो/जितने भी अंग्रेज़ हैं, उनको एक-एक बीन लो' यह नारा क्रांतिकारियों में एक नया जोश जगाता था।

चंबल फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'कमांडर-इन-चीफ़ गेंदालाल दीक्षित' में लेखक-पत्रकार-सोशल एक्टिविस्ट शाह आलम ने देश की आज़ादी के लिए संघर्ष करने वाले इस महान योद्धा के संघर्षमय जीवन की झलकियाँ पेश की हैं, जिसे सबने बिसरा ही दिया है इसलिए नई पीढ़ी भी नहीं जानती कि क्रांतिकारी गेंदालाल दीक्षित का देश की आज़ादी में क्या योगदान है?

हिन्दी दुनिया की महान भाषाओं में एक है। भारत को समझने के लिए हिन्दी ज्ञान अनिवार्य है। हिन्दी का महत्व आज इसलिए और भी बढ़ गया है क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग और तकनीक के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।

—डॉ. मैग्रेशर (इंग्लैंड)



अहसास

मनोज कुमार

लेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.)

राजस्थान, जयपुर



छोड़ दिया उन्होंने, जिनका हर पल साथ दिया
 अपना समझ कर जिनको, अपनेपन का अहसास किया
 उनकी हर जरूरत पर, साथ मैं खड़ा रहा
 पर मेरी जरूरत पर हाथ, कोई ना आगे बढ़ा।
 ये बातें ही जमाने का अहसास कराती हैं
 कभी हमें कमजोर तो कभी इंसान बनाती हैं
 सोचा उन्होंने, मैं उनका इंतजार करूंगा
 पर याद रखें वो, अपनी जंग अब मैं खुद लड़ूंगा।
 अब बढ़ूंगा आगे, मैं अपने ही दम पर
 भव जगत को पार करना है, खुद ही तैर कर
 भरोसा रखूंगा खुद पर और अपने भगवान पर
 ये जमाना है झूठा, नहीं भरोसा किसी भी इंसान पर।

होगा दुःख, जब वो साथ ना होंगे
 पर रास्ते नये हैं, जो मेरी मंजिलों के होंगे
 मैंने अब, अपने रास्ते बनाना सीख लिया है



और दिल को समझाना भी सीख लिया है।
 पर कभी जरूरत पड़े तो संकोच ना करना
 मैं दूंगा साथ, जहां से अलग किया था चलना।
 मैं अपने रास्ते खुद बनाता हूं
 जरूरत मंदों का साथ जरूर निभाता हूं
 यही विश्वास मुझे इंसान बनाता है
 कभी दिल में तो, कभी आइने में दिखता है।

हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।
 हिन्दी भाषा को अपनाने से ही समस्त भारत एक सूत्र में बंध सकता
 है। भारत की विभिन्न भाषाएं मोती की तरह बन कर हिन्दी रूपी धागे
 में पिरोने पर ही एक सुदृढ़ एवं सुन्दर माला का रूप ले सकती हैं।
 विश्व मानचित्र पर हिन्दी प्रथम भाषा के रूप में चिन्हित हो, ऐसा
 प्रयास प्रत्येक भारतीय को करना होगा।

—अज्ञात



हे ईश्वर आपने मुझे सदबुद्धि दी

प्रदीप कुमार चौधरी

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, जयपुर



बड़े भाई का फोन आया था कि वो (मानसी दीदी) जयपुर घूमने आ रही हैं। उसे स्टेशन पर लेने के लिये मुझे जाना पड़ेगा। मुझे आश्चर्य हुआ था कि जून माह की इस भयानक गर्मी में उसे ये क्या सूझा था। राजस्थान में अच्छी खासी गर्मी पड़ती है। यदि आना ही था तो मौसम का ध्यान तो रखना चाहिये था। मैं बता दूँ कि मैं भी कुछ आराम पसंद होने के कारण कभी कभी किसी बात को टाल जाता हूँ। खैर, मन की झुंझलाहट को किनारे कर के मैंने सोचा कि निर्णय उनका है, मैं क्या कर सकता हूँ। कुछ दिनों के बाद मानसी दीदी के लड़के का फोन आया, अंकल, मैं मम्मी को लेकर मुंबई से जयपुर पहुंच रहा हूँ। साथ में मानसी दीदी की पुत्री-दामाद भी आ रहे हैं। उसने बताया कि, उनके लिए मैं एम.आई. रोड पर दो कमरे किसी अच्छे होटल में बुक करा दूँ। मैंने कहा तुम निश्चित रहो, सारी व्यवस्था हो जाएगी। मानसी दीदी मुझसे उम्र में काफी बड़ी थीं। मैं जब कक्षा आठ में रहा हूँगा तब उनका विवाह हो चुका था। कुछ वर्षों के बाद उनके पति की मृत्यु हो गई थी। मैं सोच रहा था कि क्या मैं उन्हें इतने वर्षों बाद पहचान सकूँगा।

तय दिन पर मैं उनकी ट्रेन के आने से पहले ही स्टेशन पर पहुंच कर उनका इंतजार कर रहा था। ट्रेन आ पहुंची थी, कुछ धुंधली सी यादों के सहारे मैंने उन्हें पहचान लिया। बहुत बदल चुकी थीं वह, चेहरे पर अब वो ताजगी नहीं थीं और काफी कमजोर और थकी हुई दिख रही थीं। उन सभी को होटल में लेकर गया और उनसे कहा कि आप आज आराम कर थकान मिटा लें। कल से आपका घूमने का प्रोग्राम जैसा भी हो मुझे बता दें। एक दिन आप हमें भी दें ताकि घर पर सभी साथ खाना खाते हुए ढेर सारी बातें कर सकें। अगले दिन वे परिवार के साथ जयपुर घूमिं और फिर एक दिन हमारे घर भी आईं। मेरी पत्नी और बिटिया से बड़े ही प्रेम से वे सभी मिले और फिर आरम्भ हुई बहुत पुरानी बातें। एक एक करके कई किस्से पुरानी यादों की परतों से बाहर आने लगे। बातों ही बातों में उनके पुत्र ने बताया कि मम्मी कोटा भी जाना चाहती हैं और पुराने दिनों के लोगों से भी मिलना चाहती हैं। हम सबने मिलकर खाना खाया और फिर उन्होंने हमसे विदाई ली। एक अनोखी खुशी मुझे उनके चेहरे पर दिखी थी। इतने



बरसों बाद पुराने लोगों से मिलकर हम सभी खुश थे। यहां से वे कोटा गयीं, जहां उनका बचपन बीता था। मेरे बड़े भाई साहब से और अन्य पुराने जानकार लोगों से मिलीं, फिर वह सपरिवार मुंबई लौट गयीं।

कुछ ही दिन बीते थे कि उनके बेटे का फिर से फोन आया, अंकल, मम्मी की डेथ हो गयी है। मुझे जैसे बड़ा झटका सा लगा। मैं पूछना चाहता था, ये कैसे हुआ, इससे पहले ही वह रूंधे गले से बोला अंकल, मम्मी को कैंसर था और आखिरी समय में उन्हें आप सबसे मिलने की बड़ी तमन्ना थी इसीलिए हम पुराने परिचितों से उन्हें मिलाने लाए थे। मैं अन्दर तक हिल गया था। सोचने लगा हे ईश्वर यदि मैंने उनको उनकी जयपुर यात्रा के दौरान उचित तवज्जो न दी होती तो मैं अपने आपको जीवन में कभी माफ नहीं कर पाता। हम सभी के जीवन में कभी कभी कुछ घटनाएं ऐसी घटित हो जाती हैं कि मन मस्तिष्क पर गहरी छाप छोड़ जाती हैं।

देशभर को बांधने के लिए भारत के भिन्न-भिन्न हिस्से एक दूसरे से संबंधित रहें, इसके लिए हिन्दी की जरूरत है।

—जवाहरलाल नेहरू



मेरी जिद

डॉ. गोविन्द सिंह मीना

सहायक पुरातत्वविद्
कार्यालय भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,
जयपुर मण्डल, जयपुर



है हौसला कि कशती को
तूफां से निकाल लाउंगा
चले चाहे तूफां कितना ही
फिर भी मैं मंजिल पर पहुंच जाउंगा।
मुझे मालूम है कि जिन्दगी है तो झंझटें हैं
और झंझटें हैं तो बिखराव भी हैं
पर वादा है ऐ जिन्दगी तुझसे
मैं हर झंझट पर पार पाउंगा।
नहीं होउंगा कभी निराश
जिन्दगी तेरा चेहरा देखूंगा आसमां में बार बार
गिर पड़कर, उठ चलकर
देख लेना मैं शिखर पर पहुंच जाउंगा।
आएंगी हजारों अड़चने, परेशानियां
आए चाहे प्रमाद, अवसाद कितना ही
पर पग-पग अडिग-अचल रखकर



देख लेना मैं मंजिल को खोज लाउंगा।
जिन्दगी तू चाहे कितना ही आजमा ले
रुला ले, या फिर कितना ही गिरा ले
हारना मेरी फितरत नहीं
देख लेना मैं तुझसे हर बार जीत जाउंगा।
न पूछ कि मेरी मंजिल कहाँ है
अभी तो चलने का इरादा किया है
न हारुंगा हौसला जिन्दगी भर
मैंने किसी से नहीं, खुद से वादा किया है।

हिन्दी वह धागा है जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को
पिरोकर भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।

—डॉ. जाकिर हुसैन



सिर्फ उनके लिए

राजेश कुमार जांगिड़

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्यालय वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय, जयपुर



उसके वजूद से जुड़ा, मेरा वजूद
 वो कांटों में मेरे साथ, वो फूलों में भी मेरे साथ
 उसकी आह, मेरी आह, मेरा सुकून, उसका भी
 बस अशक हैं कि उन्हें दिखते क्यों नहीं।
 तेरे इजहार में, मेरा इकरार जुड़ा है
 मैं तुझसे नहीं, तू मुझसे है जुदा
 धड़केगा ये दिल, बस तुझ पर होके फ़िदा
 बस धड़क दिल की उन्हें दिखती क्यों नहीं।
 उनके आने की आहट, मुझे महसूस होती है
 उनकी मुस्कान, मेरे सपने सजाती है
 हवा में उड़ती अलकें, भ्रमर को लजाती हैं
 एक भ्रमर उनके लिए, उन्हें दिखता क्यों नहीं।
 हलक के नीचे जाता नहीं कुछ
 वो कैसे जी रहें होंगे
 आती हुई बरकत, जाने रूक गई आकर कहाँ
 उठे दुआओं के हाथ उन्हें दिखते क्यों नहीं।



गज़ल

रामानन्द
आमंत्रित रचनाकार



पतन की राह पर, अब वह अग्रसर है
इन दिनों उसकी, स्थिति अब निम्नतर है
चुपचाप बैठा, नहीं देखा कभी मैंने उसको
खामोशी थी पहचान उसकी, अब बोलता अधिकतर है।
झूठे दिखावे पर, विश्वास करता रहा सारी उम्र
बैठा सोचता है वह, हर बात की मुझको खबर है
उम्मीदों के कत्ल पर, प्रहसन करता रहा वह
दामन में फैली, विष-बेल से वह तर-बतर है।
बहुत कुछ खो दिया, आकर जगत में उसने
मेरी हर बात का, पड़ता नहीं कुछ असर है
पंखों को हवा देकर, उड़ता रहा गगन में वह
जमीं पर आकर, स्थिति उसकी अब बेहतर है।
मिटा ही देगा पद-चिन्ह, वह उस वीराने के
खामोशियों के शहर में, घूमता अब इधर-उधर है
शृंखला तोड़कर, अपने सुगठित विचारों की
चल पड़ा है, जाने किस ओर उसकी डगर है।



चोखो ना लागे

मदन लाल कोली
आमंत्रित रचनाकार



बनिया व्यापार बिना
दुल्हन सिनगार बिना
दुल्हा बरात बिना
चोमासा बरसात बिना
चोखो ना लागे।
भोजन थाली बिना
बगीचा माली बिना
कविता छन्द बिना
पुष्प सुगन्ध बिना
चोखो ना लागे।
मयूर पंख बिना
मन्दिर शंख बिना
गीत सुरताल बिना
अश्व चाल बिना
चोखो ना लागे।

ब्राह्मण चोटी बिना
पहलवान लंगोटी बिना
पशु पूंछ बिना
मर्द मूँछ बिना
चोखो ना लागे।
चाकू धार बिना
पापड़ खार बिना
भोजन भूख बिना
वृक्ष फल बिना
चोखो ना लागे।
इत्र महक बिना
पक्षी चहक बिना
भोजन नमक बिना
चूड़ी खनक बिना
चोखो ना लागे।



युवाओं की सफलता का राजमार्ग है : सकारात्मक सोच

पदम चन्द गाँधी
आमंत्रित रचनाकार



सफलता एवं असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। एक ने बॉल उछाली, दूसरे के हाथ से बॉल छूट गयी, तीसरे ने कैच कर ली। कैच करने वाला सफल हो गया और जिसके हाथ से बाल छूट गयी वह असफल व्यक्ति होता है एवं निराश हो गया। उसकी सोच नकारात्मक हो गयी। वह कुंठित हो गया और गलत कदम उठाने पर तैयार हो गया। ऐसी स्थितियाँ अधिकांशतः युवाओं में देखी जाती हैं। जो स्पष्ट करती हैं कि वे अपनी छोटी-छोटी असफलताओं पर ही शीघ्र ही कुंठित होकर निराशा को गले लगा लेते हैं। असफलता के कारणों का यदि चिन्तन मनन कर लिया जाये, उन्हें ढूँढकर निराकरण कर दिया जाये तो सफलता शत प्रतिशत निश्चित है क्योंकि असफलता ही सफलता की कुंजी है तथा सफलता के सूत्र असफलताओं के झंझावातों में से ही निकलते हैं। देखने में आता है कि अधिकांश युवा सफल होने के लिए अपने लक्ष्य को पूर्णतः केन्द्रित नहीं कर पाते हैं। वे एक साथ बहुत से लक्ष्यों को टारगेट बना लेते हैं। भले ही इनमें उनकी समय नियोजन, लक्ष्य का चयन, अपनी क्षमता से भारी लक्ष्य का चयन, उचित मार्ग दर्शन का अभाव, या उचित वातावरण का अभाव रहा हो लेकिन यही सत्य है कि सफल वही होता है जो अपने अस्तित्व (क्रिया, विचार और भावना का एकीकृत रूप) को धारधार वज्र बनाकर अपने लक्ष्य पर टूट पड़े। यदि क्रिया विचार और भावना का समन्वय नहीं होगा तो जीत का परचम नहीं फहराया जा सकता।

असफलता हमारी कमजोर एवं दुर्बल मानसिकता में है जो अनगिनत चिपचिपे, धुंधले, एवं अस्पष्ट नकारात्मक विचारों से घिरी रहती है। इनसे घिरा व्यक्ति उन बातों पर अधिक ध्यान केन्द्रित करता है जिनको किसी कीमत पर महत्व नहीं देना चाहिए।

युवा अगर सफलता का स्वप्न देखते हैं तो उन्हें केवल सकारात्मक विचारों को प्रश्रय देना चाहिए। अच्छे विचारों से साझेदारी करनी चाहिए। सकारात्मक विचार सदैव आगे बढ़ने को प्रेरित करते हैं तथा विवादों से किनारा करते हैं। युवा स्वयं तथा उनके परिजन उनकी क्षमता का मूल्यांकन किए बिना उनकी इच्छा एवं क्षमता विरुद्ध बहुत बड़े लक्ष्य को उन पर थोप देते हैं परिणामस्वरूप वे अपने लक्ष्य को बीच में ही छोड़ देते हैं या असफल हो जाते हैं। अतः युवाओं को अपनी शक्तियों एवं सीमाओं का मूल्यांकन



कर अपनी गलतियों का विश्लेषण करना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों को आत्मसात करना चाहिए कि “हजार बार गिरने पर भी एक बार फिर उठो क्योंकि जीवन एक संघर्ष है इसे समझना आवश्यक है।” शास्त्रों के आद्धान को मत भूलो “उठो, जागो तथा जब तक उद्देश्य की प्राप्ति न हो, रुको मत!”

सफलता के लिए आवश्यक है सर्वोपरि प्राथमिकताओं का निर्धारण। अंग्रेजी में कहावत है “फर्स्ट थिंग्स फर्स्ट” अर्थात् जिसे सबसे पहले करना है उसे सर्वोपरि वरीयता देकर सबसे पहले करना चाहिए। वरीयता के अभाव में महत्वपूर्ण कार्य छूट जाते हैं तथा पूर्ण नहीं होते हैं अतः वरीयता के आधार पर प्राथमिकताओं के निर्धारण से लक्ष्य शीघ्र प्राप्त होते हैं।

सफलता प्राप्ति के लिए आज युवा उन संसाधनों पर अधिक ध्यान देते हैं तथा लालायित रहते हैं जो उनके पास नहीं है। परिजन यथासंभव उन साधनों को अपने बच्चों को उपलब्ध कराते हैं लेकिन इन साधनों का जिस कार्य हेतु उपयोग जितनी मात्रा एवं क्षमता में होना चाहिए, नहीं होता है जबकि सफलता प्राप्ति के लिए इनका सदुपयोग हो, उन्हें पूर्ण रूप से टाइम प्लानिंग से प्रारम्भ करें तथा निगरानी रखें, जब तक वह कार्य पूर्ण नहीं हो जाता।

आज युवाओं की सहनशक्ति क्षीण होती जा रही है, धैर्य का अभाव रहता है, जिसके कारण छोटी-छोटी बाधाओं से वे घबरा जाते हैं। जीवन में उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख, आपत्ति-विपत्ति भी घटित होती है लेकिन इन्हें सहकर ही आगे बढ़ा जाता है। इन सभी को अपनों के बीच शेयर करना चाहिए जिससे हल जरूर निकलता है। युवा अपने पुरुषार्थ, संकल्पशक्ति, ईश्टबल तथा सकारात्मक विचारों की अवधारणा पर आस्था रखकर सार्थक प्रयत्नों द्वारा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करें तो निश्चित रूप से सफल होंगे।

देश के सबसे बड़े भूभाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा की अधिकारिणी है।

—सुभाषचन्द्र बोस



सत्य साईं बाबा : एक महान अवतार

बनवारी लाल सोनी
आमंत्रित रचनाकार



रविवार दिवस का प्रथम प्रहर
झकझोर गया जन-जन का मन
कारण कि सत्य साईं बाबा ने
छोड़ दिया था नश्वर तन।

वह पुट्टपर्थी का अस्पताल भी
रोया निज मज़बूरी पर
लगता था आज फिरा पानी
सब श्रद्धा और सबुरी पर।

संघर्ष किया मौत से खूब
समझो बीता था एक माह
जब समय सात-चालीस हुआ
बरबस ही निकली एक आह।

माहौल मातमी हुआ और
थे सुबक रहे सब नर-नारी
बच्चों की आँखों में आँसू देखे
तो रोया सारा जहां।



था कड़ा समय का अनुशासन, व्यक्तित्व प्रभावी और सरल
परिवारवाद से रहे दूर, गंगाजल जैसे रहे विमल
चौथा महीना, तिथि बीस चार और सन भी दो हजार ग्यारह
सेवा समाज की करी सदा, थी राजनीति से भी दूरी।

परहेज विदेश यात्रा से, यद्यपि थी तनिक न मज़बूरी
सिद्धांत चार अपनाए थे, बस एक जाति है मानवता
प्रेम का धर्म ही समझे थे, सबसे ही रखते थे समता
दिल की भाषा ही भाषा थी, सर्वत्र देखते जगदीश्वर।

उनमें सबकी ही श्रद्धा थी, तब चित्र टंगे देखे घर-घर
माता का नाम ईश्वरम्मा, कोडम्मा राजू पिता-नाम
बचपन के सत्यनारायण तुम, हो गया धन्य पुट्टपर्थी गाम
अध्यात्म राह पकड़ी जबसे, पग-पग दिखलाए चमत्कार
सबसे बढ़कर तो बात यही, हर प्राणी से ही किया प्यार।

वे एक साथ दो जगह दिखे, ग्रेनाइट, केण्डी-सुगर बनी
पानी के पेय पदार्थ बने, पानी से ही पेट्रोल बनी
फल अलग-अलग एक ही वृक्ष में, सपनों में तुम्हीं नजर आए
तुमसा दूजा न दिखा कोई, जो दीन-हीन को अपनाए।

भारत से बाहर भी सत्ता, अनगिनत देशों में अनुयायी
संभव पल करें असंभव को, होती न तनिक भी कठिनाई
जब उम्र हुई दस-चार साल, सांसारिक जीवन दिया त्याग
सन्यास ले लिया था तब से, समझो दुनियाँ के खुले भाग।

निज जीवन रखा गोपनीय, पुट्टपर्थी को पहचान मिली
वह छोटा सा ही गाँव रहा, पर शानदार दुकान खुली



होटल, लग्जरी रिजॉर्ट यहाँ, इण्डियन क्राफ्ट के लगे ढेर
फॉरेन एक्सचेन्ज खूब होता, आने-जाने में कहाँ देर।

युवकों, महिलाओं के हित के लिए खोले शिक्षा के कई द्वार
जिनमें पढ़ जीवन बदल गया, जीत ही मिली तब कहाँ हार
लाखों की प्यास बुझाई थी, सचमुच प्रसन्न सब नर-नारी
माना तुम गए बड़े घर को, पर काम आज भी हैं जारी।

वह सहज सादगी चेहरे की, वह भोली सी आँखें प्यारी
संभव हो तो सांई बाबा, हम सबके सपनों में आना
फिर एक नया अवतार धार, प्रभु बुनो नया ताना-बाना
पचपन हजार करोड़ राशि, भगवान करे बढ़ती जाए।

जग-मंगल कार्य रहें जारी, तो मूर्ति आपकी मुस्काए
जयपुर आए थे तीन बार, नारी-शिक्षा पर दिया जोर
दुःख-रजनी तनिक न ठकर सकी, तुम ही लाए थे सुखद भोर
जिस महफ़िल में बैठें बाबा, सबकी आभा बढ़ जाती थी
तुम संत-वसंत-अनंत, सदा तब कोयल कूक मचाती थी।

देश को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा हिन्दी ही हो सकती
है।

—लाल बहादुर शास्त्री



दधीचि का अस्थिदान

संकलन- बालकृष्ण शर्मा

वरिष्ठ लेखाधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर



एक बार देवराज इन्द्र के मन में अभिमान पैदा हो गया जिसके फलस्वरूप उसने देवगुरु बृहस्पति का अपमान कर दिया। उसके आचरण से क्षुब्ध होकर देवगुरु इन्द्रपुरी छोड़कर अपने आश्रम में चले गए। बाद में जब इन्द्र को अपनी भूल का आभास हुआ तो वह बहुत पछताए क्योंकि अकेले देवगुरु बृहस्पति ही ऐसे व्यक्ति थे, जिनके कारण देवता दैत्यों के कोप से बचे रहते थे। इन्द्र देवगुरु को मनाने के लिए उनके आश्रम में पहुंचा। उसने हाथ जोड़कर देवगुरु को प्रणाम किया और कहा- आचार्य! मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया था। उस समय क्रोध में भरकर मैंने आपके लिए जो अनुचित शब्द कह दिए थे, मैं उनके लिए आपसे क्षमा मांगता हूं। आप देवों के कल्याण के लिए पुनः इन्द्रपुरी लौट चलिए। हम सारे देव मिलकर आपकी भली-भांति सेवा...।' इन्द्र का शेष वाक्य अधूरा ही रह गया क्योंकि देवगुरु अपने तपोबल से अदृश्य हो चुके थे। इन्द्र ने उनकी बहुत खोज की किन्तु जब देवगुरु का कुछ पता न चला तो वह थक-हार कर इन्द्रपुरी लौट गया।

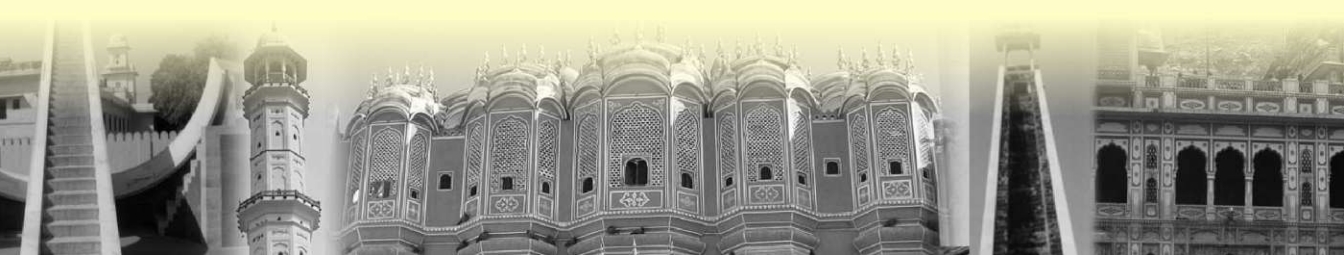
दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने जब यह समाचार सुना तो उन्होंने दैत्यों से कहा- 'दैत्यों! यही अवसर है जब तुम देवलोक पर अधिकार कर सकते हो। आचार्य बृहस्पति के चले जाने के बाद देवों की शक्ति आधी रह गई है। तुम लोग चाहो तो अब आसानी से देवलोक पर अधिकार कर सकते हो।' उचित अवसर देखकर दैत्यों ने अमरावती को घेर लिया और चारों ओर मार-काट मचा दी। इन्द्र किसी तरह जान बचाकर वहां से भाग निकला और पितामह ब्रह्मा की शरण में पहुंचा। वह करबद्ध होकर ब्रह्मा जी से बोला, 'पितामह, देवों की रक्षा कीजिए। दैत्यों ने अचानक हमला करके अमरावती में मार-काट मचा दी है। वे चुन-चुनकर देव योद्धाओं का वध कर रहे हैं। मैं किसी तरह जान बचाकर यहाँ तक पहुंचा हूँ।

पितामह ब्रह्मा आचार्य बृहस्पति के देवलोक छोड़ जाने की बात सुन चुके थे। बोले, यह सब तुम्हारे अहंकार के कारण हुआ है, देवराज। अब भी यदि तुम आचार्य बृहस्पति को मना सको और उन्हें देवलोक में ले आओ तो वे दैत्यों पर विजय प्राप्त करने का कोई उपाय तुम्हें बता देंगे। मैं अपनी भूल पर बहुत पश्चाताप करता उन्हें खोजने के लिए गया था, पितामह। किंतु मेरे देखते ही वे अपने तपोबल से अदृश्य हो गए, इन्द्र ने कहा।

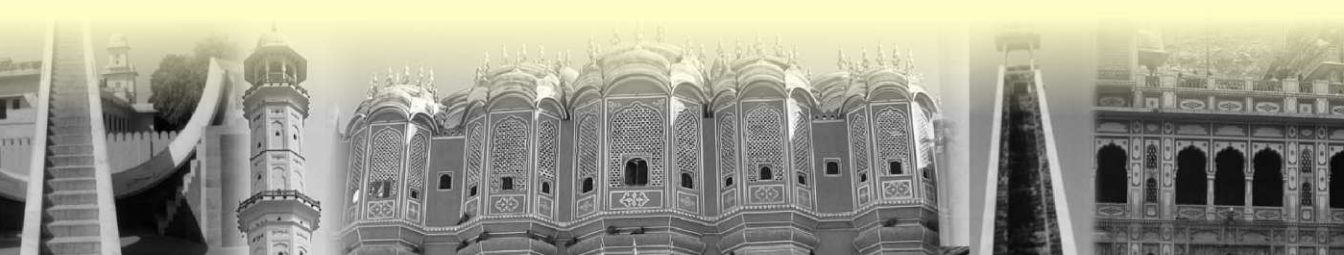


आचार्य तुमसे कुपित हैं, इन्द्र। ब्रह्मा जी ने कहा, अब जब तक तुम उनकी आराधना करके उन्हें स्वयं सम्मानपूर्वक देवलोक नहीं ले जाओगे, वे अमरावती नहीं आएंगे।

फिर क्या किया जाए, पितामह? आचार्य का कुछ पता-ठिकाना भी तो हमारे पास नहीं है। उन्हें खोजने में समय लगेगा। तब तक तो दैत्य संपूर्ण अमरावती को जलाकर राख कर देंगे। इन्द्र की बात सुनकर ब्रह्मा जी ने अपने नेत्र बंद कर लिए। वे चिंतन में डूब गए। कुछ देर बाद उन्होंने अपने नेत्र खोले और इन्द्र से कहा। इन्द्र! इस समय भूमंडल में सिर्फ एक ही व्यक्ति है जो तुम्हें इस आपदा से मुक्ति दिला सकता है और वह है महर्षि त्वष्टा का महाज्ञानी पुत्र विश्वरूप। अगर तुम उसे अपना पुरोहित नियुक्त कर लो तो वह तुम्हें इस संकट से मुक्त करा देगा। ब्रह्माजी ने उपाय बताया। पितामह का परामर्श मानकर देवराज इन्द्र महर्षि विश्वरूप के पास पहुंचे। विश्वरूप के तीन मुख थे। पहले मुख से वे सोमवल्ली लता का रस निकालकर यज्ञ करते समय पीते थे। दूसरे मुख से मदिरा पान करते तथा तीसरे मुख से अन्न आदि भोजन का आहार करते थे। इन्द्र ने उन्हें प्रणाम किया तो महर्षि ने पूछा, आज यहाँ कैसे आगमन हुआ, देवराज? आप किसी विपत्ति में तो नहीं फंस गए? आपने ठीक अनुमान लगाया है मुनिश्रेष्ठ। इन्द्र ने कहा, देवों पर इस समय बहुत बड़ी विपत्ति आई हुई है, दैत्यों ने अमरावती को घेर रखा है। चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई है। विश्वरूप मुस्कराए। बोले, यह तो देवों और दैत्यों का पुराना झगड़ा है, देवराज। दोनों ही महर्षि कश्यप की संतानें हैं। इसलिए कोई एक-दूसरे से छोटा नहीं बनना चाहता। तुम्हारे इस झगड़े में मैं क्या कर सकता हूँ? देवों को इस समय आपकी सहायता की आवश्यकता है मुनिश्रेष्ठ! सिर्फ आप ही उनका भय दूर कर सकते हैं। इस प्रकार इन्द्र ने जब विश्वरूप की बहुत अनुनय-विनय की तो विश्वरूप पिघल गए। उन्होंने देवों के यज्ञ का पुरोहित बनना स्वीकार कर लिया। वे बोले, देवों की दुर्दशा देखकर ही मैंने आपके यज्ञ का पुरोहित बनना स्वीकार किया है, देवराज! तत्पश्चात उन्होंने देवराज को नारायण कवच प्रदान करते हुए कहा, यह कवच ले जाओ देवराज! दैत्यों से युद्ध करते समय यह न सिर्फ तुम्हारी रक्षा करेगा बल्कि तुम्हें विजयश्री भी प्रदान करेगा। विश्वरूप से नारायण कवच प्रदान करके देवराज पुनः अमरावती पहुंचे। उनके वहां पहुंचने से देवों में नए उत्साह का संचरण हो गया और वे पूरी शक्ति के साथ दैत्यों पर टूट पड़े। भयंकर युद्ध छिड़ गया। इस बार इन्द्र के पास नारायण कवच होने के कारण दैत्य मैदान में नहीं ठहर सके। वे पराजित होकर भाग खड़े हुए। विजयश्री देवताओं के हाथ लगी। युद्ध समाप्त होने पर देवराज विश्वरूप का आभार व्यक्त करने के लिए उनके पास पहुंचे। बोले, आपकी कृपा से हमने दैत्यों पर विजय प्राप्त कर ली है, मुनिवर! अब हम एक ऐसा यज्ञ करना चाहते हैं जिसके फलस्वरूप देवलोक हमेशा के लिए दैत्यों के भय से मुक्त रह सके और आप हमें वचन दे ही चुके हैं कि उस यज्ञ के पुरोहित आप होंगे, तो कृपा करके अब आप हमारे साथ चलिए। देवराज के अनुरोध पर



विश्वरूप अमरावती पहुंचे। उन्होंने यज्ञ में आहुतियां डालनी प्रारंभ कर दी। उसी समय एक दैत्य ब्राह्मण का वेश धारण कर महर्षि विश्वरूप के पास आ बैठा। उसने धीरे से महर्षि विश्वरूप से कहा, महर्षि! देवताओं का पक्ष लेकर जो यज्ञ दैत्यों के विनाश के लिए कर रहे हैं, यह उचित नहीं है। क्यों उचित नहीं है? विश्वरूप ने पूछा, इसलिए उचित नहीं है कि देव और दैत्य एक ही पिता की संतानें हैं। आप भूल रहे हैं कि स्वयं आपकी माता जी एक दैत्य परिवार से हैं। क्या आप चाहेंगे कि आपका मातृकुल हमेशा के लिए नष्ट हो जाए? बात विश्वरूप की समझ में आ गई। उन्होंने आहुतियां देते समय देवों के साथ-साथ दैत्यों का नाम भी लेना आरंभ कर दिया। यज्ञ समाप्त हुआ लेकिन उसका कोई लाभ देवों को न मिला। इस पर देवराज इन्द्र ने विश्वरूप से कहा, मुनिवर! इतने बड़े यज्ञ का कोई अच्छा सुफल नहीं मिला। देवताओं की शक्ति में तो किंचित भी बदलाव नहीं आया। वे तो जैसे पहले थे, वैसे ही अब भी हैं, तभी इन्द्र का एक गुप्तचर उनके पास पहुंचा, उसने बताया, यज्ञ का सुफल कैसे मिलता देवराज! मुनिवर देवों के साथ-साथ दैत्यों को भी तो आहुतियां देते रहे हैं। इस यज्ञ का जितना लाभ देवों को मिला है उतना ही दैत्यों को भी मिला है। गुप्तचर के मुख से यह समाचार सुनकर इन्द्र गुस्से से भर उठे। उन्होंने तलवार निकाल ली और ऋषि विश्वरूप पर झपटे, ढोंगी ऋषि! तूने देवों के साथ विश्वासघात किया है। यज्ञ देवों ने कराया और तू आहुतियां अपने मातृकुल के लोगों को देता रहा। अब मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूंगा, कहते हुए उसने तलवार के एक ही वार से विश्वरूप के तीनों सिर काट दिए। इन्द्र द्वारा एक ब्राह्मण की यज्ञस्थल पर ही हत्या किए जाने की सर्वज्ञ निंदा होने लगी। देवों के साथ-साथ ऋषि-मुनि भी उसे धिक्कारने लगे, इन्द्र तू हत्यारा है, तूने ब्रह्महत्या की है, तेरे जैसे व्यक्ति को इन्द्र पद पर बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। तेरे लिए यही उचित है किसी कुए या बावड़ी में कूदकर अपने प्राणों का विसर्जन कर डाल, आदि-आदि। रोजाना की धिक्कार और प्रताड़ना सुनकर इन्द्र दुखी रहने लगा। उधर, जब यह समाचार महर्षि त्वष्ठा तक पहुंचा तो वे बेहद क्रोधित हुए। गुस्से से दहाड़ते हुए बोले, इन्द्र की ऐसी हिम्मत कैसे हुई कि वह मेरे पुत्र का वध करके इन्द्रासन पर बैठा रहे। मैं उसे मिट्टी में मिला दूंगा। मेरे पुत्र की हत्या करने का परिणाम उसे भोगना ही पड़ेगा। त्वष्ठा उसी दिन यज्ञ करने के लिए बैठ गए। यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ वेदी से एक पर्वत के समान आकार वाला दैत्य प्रकट हुआ। उसके एक हाथ में गदा और दूसरे में शंख था। उसने झुककर ऋषि को प्रणाम किया। ऋषि ने उसको नाम दिया, वृतासुर। आज्ञा दीजिए ऋषिवर? वृतासुर ने सिर झुकाकर कहा। वृतासुर, तुम तत्काल अमरावती जाओ और कपटी इन्द्र के साथ-साथ समस्त देवताओं का विनाश कर दो। महर्षि त्वष्ठा ने क्रोध से कांपते हुए आदेश दिया। त्वष्ठा का आदेश पाते ही वृतासुर वायु वेग से देवलोक की ओर उड़ चला। वृतासुर ने अमरावती में पहुंचकर देवों का विध्वंस करना शुरू कर दिया। जो भी सामने आता, वह निःसंकोच होकर उसका वध कर डालता। उसने अमरावती में ऐसा कोहराम मचाया कि देवता त्राहि-त्राहि

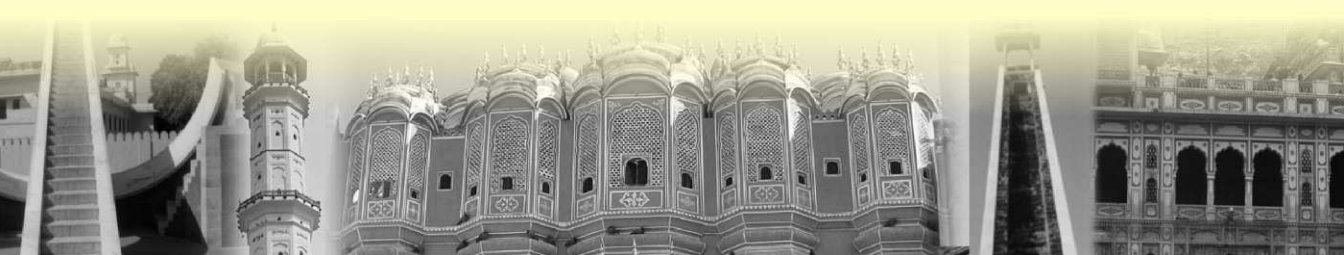


कर उठे। इन्द्र अपने ऐरावत पर चढ़कर उसके सामने पहुंचा और उस पर वज्र प्रहार किया किंतु वृतासुर ने एक ही झटके में उसके हाथ से वज्र छीनकर दूर फेंक दिया। इस पर इन्द्र ने उस पर आग्नेय अस्त्रों से आक्रमण किया किंतु उनका किंचित भी असर वृतासुर पर न हुआ। किसी खिलौने की तरह उसने इन्द्र के हाथ से उसका धनुष छीन लिया और उसे तोड़कर एक ओर फेंक दिया। फिर वह अपना भयंकर मुख खोलकर इन्द्र को खाने के लिए उसकी ओर झपटा। यह देखकर इन्द्र भयभीत हो गया और ऐरावत से कूदकर अपनी जान बचाने के लिए भाग निकला। पीछे वृतासुर अपने भयंकर अटूटहासों से अमरावती को गुंजाता रहा। देवराज भागकर सीधे पहुंचे विष्णुलोक में भगवान विष्णु के पास। रक्षा कीजिए देव। देवताओं को बचाइए। उसने आर्त स्वर में भगवान से विनती की, देवों को वृतासुर के कोप से बचाइए अन्यथा वह समस्त देवजाति का विनाश कर डालेगा। यह सुनकर भगवान विष्णु ने भी उसे धिक्कारा। कहा, इन्द्र! एक ब्राह्मण और वह भी ऐसा जो तुम्हारे यज्ञ का संचालन कर रहा हो, उसका यज्ञस्थल पर ही वध करके तुमने समस्त देवजाति को कलंकित कर दिया। तुमने अक्षम्य अपराध किया है। महर्षि त्वष्टा ने तुम्हारे लिए उचित ही दंड का निर्णय किया है।

मुझे अपने कृत्य पर बहुत पश्चाताप हो रहा है, प्रभु। मैं उस समय क्रोध में अंधा हो रहा था इसलिए ब्रह्महत्या जैसा पाप कर बैठा। मुझे क्षमा कर दीजिए और मुझे उस महाभयंकर दैत्य से मुक्ति दिलाइए। इन्द्र ने शर्मिंदगी भरे स्वर में कहा। देवेंद्र, श्रीहरि बोले, इस समय मैं तो क्या स्वयं भगवान शिव अथवा ब्रह्मा जी भी तुम्हारी रक्षा नहीं कर सकते। तुम्हारी रक्षा तो पृथ्वी पर एक ही व्यक्ति कर सकता है। वह कौन है, देव?

महर्षि दधीचि, विष्णु बोले, सिर्फ वे ही तुम्हारी रक्षा कर सकते हैं। तुम महर्षि दधीचि के आश्रम में जाओ और उन्हें प्रसन्न करके किसी तरह उनके शरीर की हड्डियां प्राप्त कर लो फिर उन हड्डियों से वज्र बनाकर यदि तुम वृतासुर से युद्ध करोगे तो विजयश्री तुम्हें ही मिलेगी। भगवान विष्णु का परामर्श मानकर इन्द्र दधीचि के आश्रम में पहुंचा। महर्षि दधीचि उस समय समाधि लगाए बैठे थे। उनकी कामधेनु उनके निकट खड़ी थी। इन्द्र महर्षि की समाधि भंग होने की प्रतीक्षा करने लगा फिर जब महर्षि ने अपनी समाधि भंग की तो उनकी दृष्टि करबद्ध खड़े इन्द्र पर पड़ी। महर्षि ने हंसते हुए पूछा, देवेंद्र! आज इस मृत्युलोक में तुम्हारा आगमन क्यों कर हुआ? देवलोक में सब कुशल से तो हैं?

कुशलता कैसी महर्षि, इन्द्र ने शर्मसार होते हुए कहा, देवों के दुर्दिन आ गए हैं। वृतासुर के भय से देव अमरावती छोड़कर जंगलों और गिरि कंदराओं में छिपते फिर रहे हैं, फिर महर्षि के पूछने पर इन्द्र ने सारी बातें उन्हें बता दीं। सुनकर दधीचि बोले, यह तो बड़ी अशुभ बातें बताईं तुमने, देवेंद्र। अब इनका निराकरण कैसे हो? महर्षि! मैं भगवान विष्णु के पास गया था। इन्द्र बोला, उन्होंने परामर्श दिया है



कि यदि आप प्रसन्न होकर मुझे अपनी हड्डियों का दान दे दें और उनसे वज्र बनाकर यदि वृतासुर से युद्ध किया जाए तो वह दैत्य उस वज्र के प्रहार से मर सकता है। हे ऋषिश्रेष्ठ। देवों पर कृपा करके मुझे अपनी अस्थियों का दान दे दीजिए।

देवेंद्र ! महर्षि दधीचि बोले, यदि मेरी अस्थियों से मानव और देव जाति का कुछ हित होता है तो मैं सहर्ष अपनी अस्थियों का दान देने के लिए तैयार हूँ। तत्पश्चात अपने शरीर पर मिष्ठान का लेपन करके महर्षि समाधिस्थ होकर लेट गए। कामधेनु ने उनके शरीर को चाटना आरंभ कर दिया। कुछ देर में महर्षि के शरीर की त्वचा, मांस और मज्जा उनके शरीर से विलग हो गए। मानव देह के स्थान पर सिर्फ उनकी अस्थियां ही शेष रह गईं। इन्द्र ने उन अस्थियों को श्रद्धापूर्वक नमन किया और उन्हें ले जाकर उन हड्डियों से 'तेजवान' नामक वज्र बनाया। तत्पश्चात उस वज्र के बल पर उसने वृतासुर को ललकारा। दोनों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ लेकिन वृतासुर 'तेजवान' वज्र के आगे देर तक टिका न रह सका। इन्द्र ने वज्र प्रहार करके उसका वध कर डाला। सभी देवता उसके भय से मुक्त हो गए।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्त्व नहीं। मेरे विचार में हिन्दी ही ऐसी भाषा है।

— लोकमान्य तिलक



सत्य का महत्व

संकलन- इति शर्मा

लेखाकार

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान,
जयपुर



सत्य से सृष्टि टिकी है, सत्य से ब्रह्माण्ड है।
 सत्य कालातीत केवल, सत्य ही भगवान है॥
 सत्य ही वो बीज जो विकसित हुआ संसार है।
 सत्य ही धर्मों का राजा, सत्य मूलाधार है॥
 सत्य पथ कंटक भरा, सत्य पथ दुर्धर्ष है।
 साधना सबसे बड़ी जिससे सतत संघर्ष है॥
 साधना जो हो कठिन तो फल वहीं मिलता बड़ा।
 सत्य में सामर्थ्य भारी तप नहीं इससे बड़ा॥
 सत्य सिंचित हो हृदय तो देवता हम भी बनें।
 सत्य के प्रताप से इन्द्र सिंहासन हिले॥
 सत्य की महिमा निराली, सत्य ही वरदान है।
 सत्य ही मानव धरम, सत्य ही पहचान है॥
 सत्य बिन सदगुण सभी ही हीन लगते हैं यथा।
 माता बिना नवजात, कल्पना है ज्यों सदा॥
 सत्य बिन व्यापार कैसा, सत्य बिन व्यवहार है।
 सत्य बिन सेवक नहीं, सत्य बिन सम्राट क्या॥



सत्य बिन फलती नहीं कोई भी आराधना ।
 सत्य बिन टिकती नहीं मतवाद की स्थापना ॥
 सत्य की ज्वाला तपो, तन मन सभी कुन्दन बनें ।
 सत्मय हों कर्म सारे, सत्मय चिन्तन बने ॥
 सत्मय वाणी प्रभावी, दुष्ट का प्रतिकार है ।
 सत्मय जो लेखनी, तलवार की वो धार है ॥
 सत्य का प्रेमी बने जो, सत्य में रमता रहे ।
 धीरज धरे निर्भय बने, सत् मार्ग पे चलता रहे ॥
 सत्य बिन जो वीरता, वो दुष्टता की बात है ।
 निज बिन खेती सरीखा, मूर्खता का काज है ॥
 सत्य ही बल निर्बलों का, सत्य ही हथियार है ।
 सत्य का संबल नहीं है, सत्मय संसार है ॥

यदि भारतीय लोग कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकता है।

—चक्रवर्ती राजगोपालाचारी



यह रागी हुई अभागी क्यों?

संकलन : एस. के. सिंह

अधीक्षक (निवारक)

केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो,
जयपुर



यह 'रागी' हुई अभागी क्यों
चावल की किस्मत जागी क्यों
जो 'ज्वार' जमी जन-मानस में
गेहूँ के डर से भागी क्यों।
यूँ होता श्वेत 'झंगोरा' है
यह धान सरीखा गोरा है
पर यह भी हारा गेहूँ से
जिसका हर कहीं ढिंढोरा है।
जाने कितने थे अन्न यहाँ
एक-दूजे से प्रसन्न यहाँ
जब आया दौर सफेदी का
हो गए मगर सब खिन्न यहाँ।
अब कहाँ वो 'कोदो'-'कुटकी' है
'साँवाँ की काया भटकी है
संन्यासी हुआ 'बाजरा' अब
गुम हुई 'काँगणी' छुटकी है।
अब जिसका रंग सुनहरा है
सब तरफ उन्हीं का पहरा है
अब कौन सुने मटमैलों की



गेहूँ का साया गहरा है।
 यह देता सबसे कम पोषण
 और करता है ज्यादा शोषण
 तोहफे में दिए रसायन और
 माटी-पानी का अवशोषण।
 यह गेहूँ धनिया सेठ बना
 उपभोगी मोटा पेट बना
 जो हज़म नहीं कर पाए हैं
 उनकी चमड़ी का फेट बना।
 अब आएँगे दिन 'रागी' के
 उस 'कुरी', 'बटो', बैरागी के
 जब 'राजगिरा' फिर आएगा
 और ताज गिरें बड़भागी के।
 जब हमला हो 'हमलाई' का
 छंट जाए भरम मलाई का
 चीनी पर भारी चीना हो
 टूटेगा बंध कलाई का।
 बीतेगा दौर गुलामी का
 गोरों की और सलामी का
 जो बची धरोहर अपनी है
 गुज़रा अब वक्त नीलामी का।

रचनाकार – श्री रामअवतार सिंह



दो राजा

संकलन : सुशील कुमार शर्मा
आमंत्रित रचनाकार



नालन्दा के राजा वीरसेन को जैसे ही राजगद्दी पर बैठे दस वर्ष बीत गए तो उसने एक राजकीय समारोह का आयोजन किया। इस समारोह में आस-पास के देशों के छोटे-छोटे राजा, मंत्रियों तथा विद्वान ब्राह्मणों आदि सभी को ही आमंत्रित किया गया।

देश के प्रसिद्ध गायक, शहनाई वादन के साथ समारोह का उद्घाटन कर रहे थे। सब लोग अपने-अपने स्थानों पर बैठ, ऊंचे मंच पर बैठे राजा वीरसेन की ओर देख रहे थे। वे अपनी रानी सीता देवी के साथ बड़े प्यार से बातें कर रहे थे। उसे राजनीति की बातें समझा रहे थे।

समारोह में जैसे ही राजा ने उठकर अपना कथन आरंभ किया, जनता ने उन की जय-जयकार के नारे लगाने शुरू कर दिये। हर ओर से यही आवाज आ रही थी। महाराज वीरसेन की जय हो। जय-जयकार के नारों के मध्य राजा वीरसेन ने अपना कथन इस प्रकार आरंभ किया,

मेरे साथियों, मित्रों, सहयोगियों, भाइयों बहनों। आज यहाँ पर जो समारोह मनाया जा रहा है, उसका कारण केवल यह है कि मैं जनता की अदालत से अपने दस वर्षों के दौरान किए गए कार्यों के बारे में उनकी राय लेना चाहता हूँ। मैं अपनी प्रजा और अतिथियों से यही पूछना चाहूँगा कि वे मेरे बारे में क्या धारणा रखते हैं? मैं अपनी ओर से यह बात फिर खुल कर कह रहा हूँ कि लोग मेरे बारे में अपने जो भी विचार हों वो निष्पक्ष होकर खुले दिल से प्रकट करें। गुण और अवगुण दोनों को निडर होकर स्पष्ट कहें।

राजा वीरसेन के कथन के पश्चात् जैसे ही लोगों ने अपने विचार प्रकट करने आरंभ किए तो इस बात पर सब लोग एक मत थे कि महाराज वीरसेन इस युग के सबसे बड़े सज्जन और न्यायप्रिय राजा हैं। वे बड़े शूरवीर और गुणवान हैं। उनके राज्य में हर छोटे बड़े को समान दृष्टि से देखा जाता है। उनके जैसा ज्ञानी राजा आस-पास के देशों में कोई नहीं है।

सारी प्रजा और बाहर से आने वाले अतिथियों ने एक मत होकर राजा वीरसेन के बारे में उसी प्रकार के विचार प्रकट किए। इसमें कोई दो राय नहीं थी कि राजा वीरसेन अपने युग के सबसे शक्तिशाली



और बुद्धिमान राजा थे। उसने अपनी प्रजा की भलाई के लिए बहुत कार्य किए थे। उसने सदा सत्य और न्याय का पालन किया। पड़ोस के किसी भी छोटे राजा का राज्य छीन लेने के लिए उस पर आक्रमण नहीं किया। हां, यदि किसी शत्रु ने उन पर आक्रमण किया तो राज्य की रक्षा डट कर की।

प्रजा अथवा अपने साथी राजाओं के विचार जान लेने पर भी उन्हें ऐसा लग रहा था जैसे ये विचार अधूरे हैं। ऐसा तो कभी नहीं हो सकता है कि उसमें केवल गुण ही गुण हों, कोई अवगुण न हो। सभा की समाप्ति के पश्चात् राजा के मन में यह विचार आया कि उसे स्वयं देश के कोने-कोने में घूमकर अपने बारे में साधारण प्रजा के विचार जानने का प्रयत्न करना चाहिए, हो सकता है लोग यहां पर राजकोप के डर के मारे अपना मुंह न खोल पा रहे हों।

राजा के मन में जो बात आ गई वह पूरी होनी ही चाहिए। उसने अपने रथवान को बुला कर आदेश दिया कि हमारा रथ तैयार करके लाओ। हम राजधानी से बाहर जाना चाहते हैं।

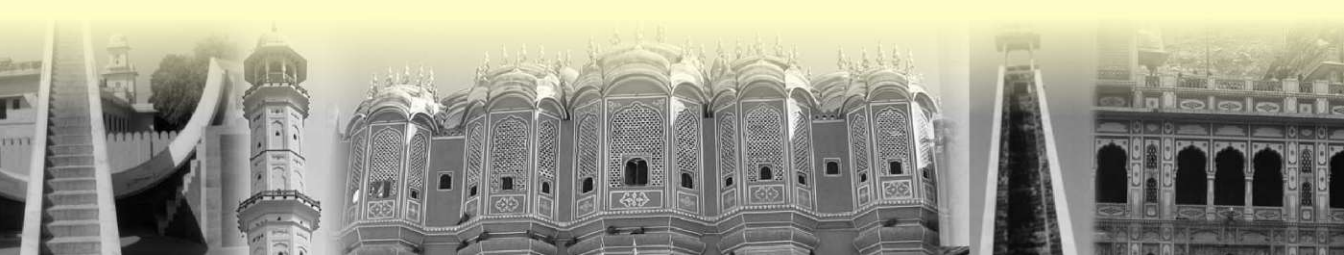
रथवान ने अपने राजा की आज्ञा के आगे सिर झुका दिया। रथ आ गया। राजा रथ में बैठे गांव-गांव का दौरा करने लगे। गांव में जाने से पूर्व वह अपना वेश बदल लेते तथा रथ को गांव की सीमा के बाहर ही छोड़कर पैदल ही गांव के अन्दर जाते और वहां लोगों से यही पूछते कि अपने राजा वीरसेन के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं?

वे तो देवता हैं, महान हैं, उनका राज्य धर्म-राज्य है। वह इस युग के सब से बड़े सत्यवादी और न्याय प्रिय राजा हैं। पूछो तो वे राजा नहीं, साक्षात् भगवान का ही रूप हैं। लोग यही जवाब देते। हर गांव में लोगों से उन्हें यही उत्तर मिलता। राजा वीरसेन को इस बात का बड़ा दुख था कि कोई भी तो ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो उसके अवगुणों से भी उसका परिचय करवाता।

कितने दिनों तक राजा इसी तरह से गांव-गांव घूमता रहा। एक दिन जब राजा का रथ एक नदी के तंग पुल को पार कर रहा था तो दूसरी ओर से भी एक रथ आता दिखाई दिया। पुल इतना छोटा था कि एक समय में केवल एक ही रथ वहां से गुजर सकता था। जैसे ही दोनों रथ आमने-सामने आए तो राजा वीरसेन के रथवान ने दूसरे रथवान से कहा कि अपने रथ को पीछे ले जाओ।

नहीं बन्धु, यह नहीं हो सकता। क्या आप यह नहीं जानते कि यह राजा अजयसिंह का रथ है? क्या आप यह नहीं जानते कि यह महाराज वीरसेन का रथ है? आपके राजा वीरसेन की आयु कितनी है? पैंतीस वर्ष, अब आप अपने राजा की आयु भी बता दें ताकि आप जान सकें कि आयु में कौन बड़ा है। मेरे राजा की आयु भी पैंतीस वर्ष है, अब आगे कहो।

देखो भाई यह तो आप जानते हैं कि राजा वीरसेन इस युग के महान् शासक हैं। यदि मैं आपके राजा के लिए रास्ता छोड़ देता हूं तो लोक की प्रथा के अनुसार हमारे राजा को छोटा माना जाएगा।



यदि तुम्हारे राजा इतने महान हैं तो आप उनके गुण बताएं।

देखो भाई हमारे राजा में सबसे बड़ा गुण तो यह है कि वे भलाई का बदला भलाई से देते हैं और बुराई का बदला बुराई से देते हैं।

नहीं मित्र हमारे राजा इसके विपरीत स्वभाव वाले हैं। मुझे तो लगता है कि तुम्हारे राजा के ये गुण, दोष से कम नहीं। राजा अजयसिंह के रथवान ने कहा।

राजा वीरसेन ने जीवन में पहली बार यह सुना था। यही सुनने के लिए तो वे व्याकुल थे कि कोई उनके दोष भी बताए। गुण तो सब लोग बताते हैं।

यदि तुम मेरे राजा के यह दोष बताते हो तो अपने राजा के गुण भी बताओ। राजा वीरसेन के रथवान ने पूछा।

सुनो भाई रथवान, मेरे राजा के गुण सुनो। मेरे राजा बुराई का उत्तर भलाई में देते हैं। जो लोग इनको हानि पहुंचाते हैं उनको भी वे लाभ पहुंचाने का प्रयत्न करते हैं।

राजा वीरसेन उस राजा अजयसिंह के गुण सुनकर बहुत ही प्रभावित हुए और अपने रथवान से बोले कि रथ पीछे हटाओ। वे स्वयं रथ से उतर राजा अजयसिंह के पास जाकर नम्रता से बोले।

महाराज, आप महान हैं। आज मुझे पहली बार पता चला है कि मुझ में क्या दोष है?

हिन्दी सीखे बिना भारतीयों के दिलों तक नहीं पहुँचा जा सकता।

—लोकार लुतने (जर्मन विद्वान)



दिनांक 26.08.2021 को ऑनलाईन (वीडियो कान्फ्रेंसिंग) आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की 81वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का कार्यवृत्त

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1), जयपुर की 81वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 26.08.2021 को अपराह्न 3 बजे ऑनलाईन (वीडियो कान्फ्रेंसिंग) आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता महालेखाकार एवं अध्यक्ष महोदया श्रीमती अतूर्वा सिन्हा ने की। बैठक का प्रारम्भ वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं सचिव श्री सोहन लाल साहू ने उपस्थित अध्यक्ष, सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख/प्रशासनिक प्रधान/प्रतिनिधिगण, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री के.पी. शर्मा एवं नये सदस्य कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, जयपुर के स्वागत से किया। तत्पश्चात वर्ष 2020-21 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने वाले, चयनित दस सदस्य कार्यालयों को बधाई देते हुए उनके नामों की घोषणा की। जो इस प्रकार हैं -

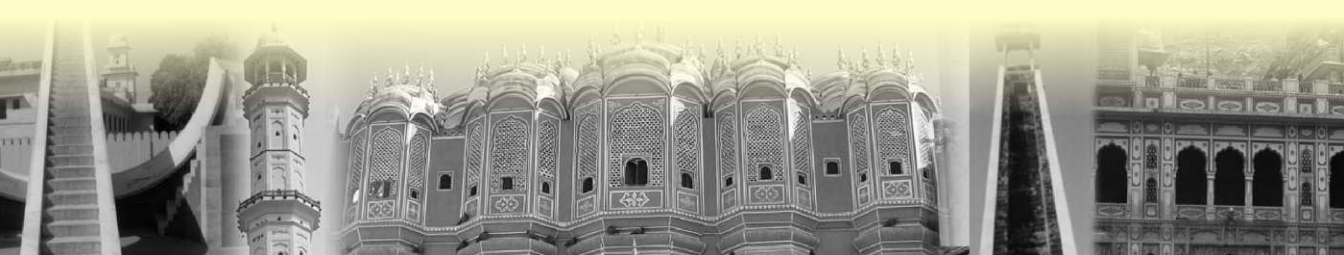
“क” वर्ग

- | | |
|--|------------------|
| 1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर | प्रथम |
| 2. कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर | द्वितीय |
| 3. कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर | तृतीय |
| 4. कार्यालय रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (द.प.क.) जयपुर | सांत्वना-प्रथम |
| 5. कार्यालय आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) जोधपुर मुख्यालय, जयपुर | सांत्वना-द्वितीय |

“ख” वर्ग

- | | |
|---|------------------|
| 1. म.शे. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जयपुर | प्रथम |
| 2. कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवाकर अंकेक्षण, जयपुर | द्वितीय |
| 3. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, आंचलिक कार्यालय, जयपुर | तृतीय |
| 4. कार्यालय कम्पनी रजिस्ट्रार-सह-शासकीय समापक, जयपुर | सांत्वना-प्रथम |
| 5. भारतीय मानक ब्यूरो, जयपुर | सांत्वना-द्वितीय |

इसके बाद हिंदी अधिकारी द्वारा बैठक की कार्रवाई को आगे बढ़ाते हुए 80वीं अर्द्धवार्षिक बैठक



(दिनांक 04.02.2021) का कार्यवृत्त, जो दिनांक 25.02.2021 को सदस्य कार्यालयों को भिजवाया गया था, की पुष्टि बैठक में उपस्थित प्रतिनिधिगणों द्वारा करवायी गई। तत्पश्चात छमाही (अवधि 01.01.2021 से 30.06.2021) के दौरान सदस्य कार्यालयों द्वारा राजकाज में हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की गई।

छमाही प्रगति प्रतिवेदनों की समीक्षा:

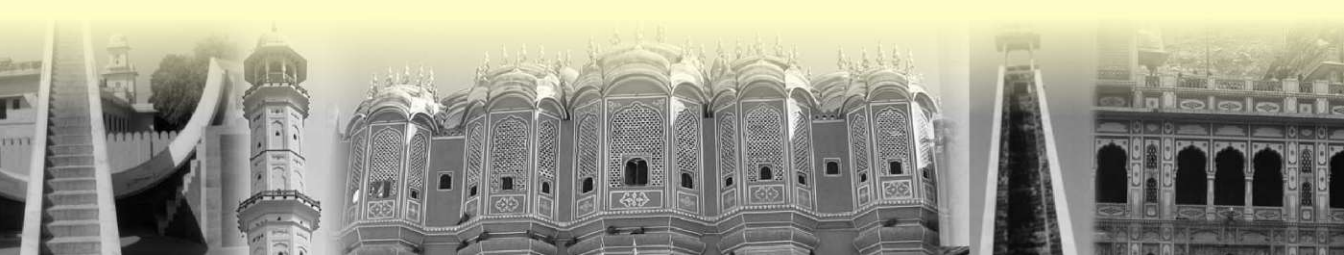
छमाही प्रगति प्रतिवेदनों की समीक्षा करते हुए हिंदी अधिकारी ने बताया कि कुल 60 सदस्य कार्यालयों में से 51 कार्यालयों से छमाही प्रतिवेदन प्राप्त हुए। विलम्ब से प्राप्त पांच कार्यालयों के छमाही प्रतिवेदनों को भी समीक्षा में शामिल किया गया। आगे बताया गया कि समेकित प्रतिवेदन के अनुसार तेईस कार्यालयों द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) की तथा चार कार्यालयों द्वारा राजभाषा नियम 5 की पालना नहीं की गई।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार “क” व “ख” क्षेत्र में प्रेषित किये जाने वाले हिंदी में मूल पत्राचार का 100 प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित है। इसमें “क” क्षेत्र में सत्रह कार्यालयों द्वारा 99 प्रतिशत से ऊपर एवं 100 प्रतिशत तथा “ख” क्षेत्र में चौदह कार्यालयों द्वारा 100 प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति की गई। शेष सदस्य कार्यालयों को “क” व “ख” क्षेत्र में प्रेषित किये जाने वाले हिंदी में मूल पत्राचार का निर्धारित 100 प्रतिशत के लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहना होगा। “ग” क्षेत्र में जहाँ पत्राचार का लक्ष्य 65% है, दो कार्यालयों ने लक्ष्य प्राप्त नहीं किया तथा “ग” क्षेत्र में ही 27 कार्यालयों ने कोई भी पत्र जारी नहीं किया।

हिंदी टिप्पण लेखन में 75 प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित है। सात कार्यालयों को छोड़कर शेष ने निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किये हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक तिमाही में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक बैठक एवं छमाही में दो बैठकों का आयोजन किया जाना आवश्यक है परन्तु आठ कार्यालयों द्वारा छमाही के दौरान एक भी विभागीय तिमाही बैठक का आयोजन नहीं किया गया तथा नौ कार्यालयों ने छमाही के दौरान एक ही विभागीय बैठक का आयोजन किया। सभी कार्यालयों को प्रत्येक तिमाही में एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाना अपेक्षित है किंतु पन्द्रह कार्यालयों द्वारा इस छमाही में एक भी कार्यशाला आयोजित नहीं की गई और चौदह कार्यालयों द्वारा केवल एक ही कार्यशाला का आयोजन किया गया।

हिंदी शिक्षण योजना:

हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत हिंदी भाषा प्रशिक्षण का एक पूर्णकालिक केंद्र जनवरी, 2015 से



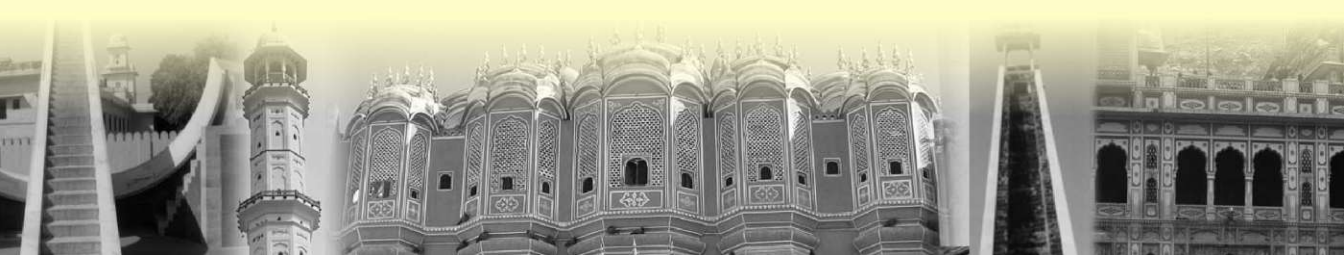
अध्यक्षीय कार्यालय, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जनपथ जयपुर में संचालित है। इसका संचालन गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पदस्थापित हिंदी प्राध्यापक, श्री राजेश मीना द्वारा किया जा रहा है। इस केंद्र के सर्वकार्यप्रभारी अधिकारी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री सोहन लाल साहू हैं। इस केंद्र में जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालयों/बैंको/निगमों/उपक्रमों के अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। हिंदी भाषा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में माह जुलाई, 2021 से नवम्बर, 2021 तक चलाए गए ऑनलाईन प्रशिक्षण में 70 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके होंगे।

अध्यक्षीय सम्बोधन:

अध्यक्ष महोदया श्रीमती अतूर्वा सिन्हा जिन्होंने कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-11) राजस्थान, जयपुर के कार्यालय प्रधान के प्रभार के साथ-साथ इस कार्यालय के कार्यालय प्रधान एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर के अध्यक्ष का अतिरिक्त कार्यभार भी दिनांक 01 अगस्त, 2021 से संभाला हुआ है, ने अपने वक्तव्य की शुरूआत सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख/प्रशासनिक प्रधान/प्रतिनिधिगण, राजभाषा प्रतिनिधि एवं उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री कुमार पाल शर्मा एवं नये नराकास सदस्य कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, जयपुर के स्वागत से की। अपने वक्तव्य में आगे बढ़ते हुए उन्होंने वर्ष 2020-21 के लिए राजकाज में सर्वाधिक कार्य हिंदी में करने वाले चयनित 10 कार्यालयों को बधाई दी और कहा कि मुझे आशा है कि भविष्य में अन्य कार्यालय भी अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देंगे जिससे आगामी वर्षों में उनके नाम भी पुरस्कृत कार्यालयों में आ सकें। आगे उन्होंने उन कार्यालयों को बधाई दी जिन्होंने, “क” व “ख” क्षेत्र में जहां पत्राचार का लक्ष्य 100 प्रतिशत है, 99 -100 प्रतिशत के मध्य लक्ष्य हासिल किया। अन्य कार्यालयों को प्रेरित/प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि यदि हम छमाही प्रतिवेदन के आकड़ों के पिछले प्रदर्शन से हमेशा बेहतर करने में प्रयासरत रहेंगे तो एक ओर तो हमें आत्म संतुष्टि होगी वहीं दूसरी ओर भविष्य में लक्ष्य प्राप्ति निश्चित ही होगी। साथ ही सभी सदस्य कार्यालयों से छमाही प्राप्त किए जाने हेतु और अधिक प्रयास करने हेतु निर्देशित किया।

राजभाषा प्रतिनिधि का संबोधन एवं सदस्य कार्यालयों के समस्या/सुझाव पर टिप्पणी:

उप निदेशक (कार्यान्वयन) एवं राजभाषा प्रतिनिधि, श्री के.पी. शर्मा जी ने अपने वक्तव्य की शुरूआत, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1), जयपुर के कार्यों की प्रशंसा से की और इसके लिए उन्होंने उच्चाधिकारियों एवं कार्यालय के कार्मिकों के हिंदी के प्रति निष्ठा व समर्पण को बताया। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में भी यह अध्यक्षीय कार्यालय अपने काम के प्रति पूर्णतया से समर्पित रहा। इनके द्वारा छमाही बैठकों से संबंधित समस्त कार्य समय पर पूर्ण दक्षता के साथ किए जा रहे हैं। नराकास (का-1) जयपुर अन्य नराकास समितियों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता आ रहा है क्योंकि



परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों यदि काम के प्रति लगन व निष्ठा है तो लक्ष्य प्रतिपूर्ति में कोई भी रुकावट नहीं आती। इसके लिए एक ओर तो यहां के कार्मिकों का काम के प्रति समर्पण दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर इस अध्यक्षीय कार्यालय के उच्चाधिकारियों का सशक्त निर्देशन भी अहम भूमिका निभाता है तभी परिणाम इस तरह से बेहद प्रशंसनीय सामने आते हैं।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने “हिंदी शिक्षण योजना” के अन्तर्गत दिए जाने वाले प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी के अन्तर्गत बताया कि इसमें पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2021-22 से शुरू किया गया है, इसके अन्तर्गत वे कार्मिक प्रशिक्षण हेतु नामांकन करवा सकते हैं जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान तो रखते हैं लेकिन अभी प्रवीणता प्राप्त नहीं हैं।

उन्होंने राजकाज में हिंदी का प्रयोग मूल रूप से करने पर जोर दिया क्योंकि हिंदी जैसी बोली जाती है, वैसी ही लिखी जाती है इसलिए उनका मानना था कि मूल रूप से हिंदी में ही टिप्पण एवं आलेखन करने पर एक ओर जहां हिंदी भाषा का प्रसार निश्चित है वहीं दूसरी ओर सरल व सहज भाषा में पत्राचार देखने को मिलेगा। साथ ही धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी द्विभाषी दस्तावेजों को पहले मौलिक रूप से हिंदी में तैयार कर फिर उनका अंग्रेजी में अनुवाद करने को भी कहा।

अपने वक्तव्य का समापन उन्होंने प्रख्यात कवि श्री दुष्यंत कुमार की कविता के कुछेक अंशों से किया जिससे उनका साहित्यिक अनुराग हम सभी के लिए बेहद प्रेरणापद रहा।

हवामहल पत्रिका:

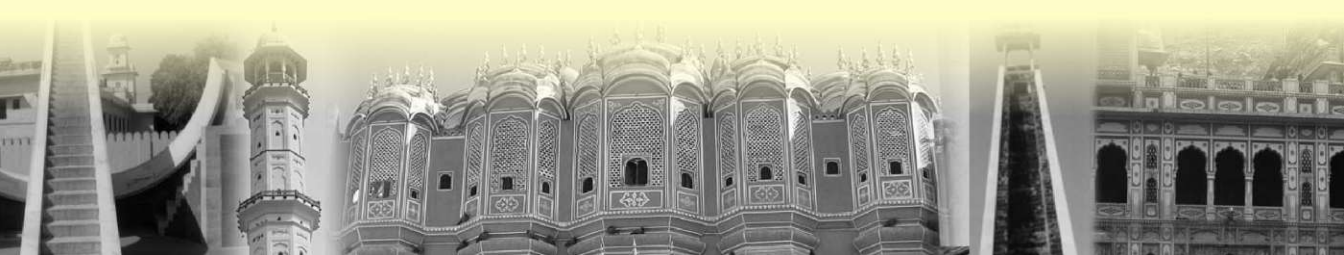
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1), जयपुर की वार्षिक हिंदी पत्रिका “हवामहल” का नियमित प्रकाशन हो रहा है। आगामी 9वां अंक (वर्ष 2020-21) प्रकाशनाधीन है।

उन्होंने नियमों की पालना सहित छमाही प्रतिवेदन को आवश्यक रूप से भिजवाने एवं बैठकों में कार्यालय प्रमुख/प्रशासनिक प्रधान की उपस्थिति सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया।

अगली बैठक की तिथि की घोषणा:

अध्यक्ष महोदया ने, राजभाषा प्रतिनिधि, सचिव एवं उपस्थित अन्य सभी सदस्यों की सहमति से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1), जयपुर की अगली 82वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 27 जनवरी, 2021 (बृहस्पतिवार) को आयोजित किए जाने की घोषणा की।

अन्त में सभी सहभागियों का, इस बैठक को सफल बनाने के लिए श्री सोहन लाल साहू, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं सचिव नराकास (का-1) जयपुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।



दिनांक 31.01.2022 को ऑनलाईन (वीडियो कान्फ्रेंसिंग) आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की 82वीं अर्द्धवार्षिक बैठक का कार्यवृत्त

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की 82वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 31.01.2022 को अपराह्न 3 बजे ऑनलाईन (वीडियो कान्फ्रेंसिंग) आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता महालेखाकार एवं अध्यक्ष महोदया श्रीमती अर्चना गुर्जर ने की। बैठक का प्रारम्भ वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं सचिव श्री सोहन लाल साहू ने अध्यक्ष, राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि एवं सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री नरेंद्र सिंह मेहरा एवं नये सदस्य कार्यालय, राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (क्षेत्र संकार्य प्रभाग) उत्तरी अंचल, जयपुर सहित सभी उपस्थित सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख/प्रशासनिक प्रधान/प्रतिनिधिगण के स्वागत से किया।

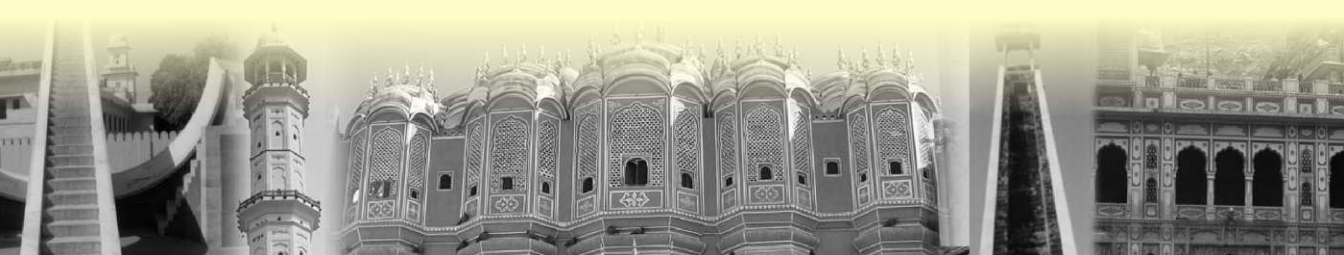
हिंदी अधिकारी द्वारा बैठक की कार्रवाई को आगे बढ़ाते हुए दिनांक 26.08.2021 को आयोजित 81वीं अर्द्धवार्षिक बैठक के कार्यवृत्त, जिसकी प्रतियां सभी संबंधितों को दिनांक 14.09.2021 को भिजवाई गयी थीं, की पुष्टि बैठक में उपस्थित प्रतिनिधिगणों द्वारा करवायी गई। तत्पश्चात सदस्य कार्यालयों से प्राप्त हिंदी छमाही प्रतिवेदन (अवधि 01.07.2021 से 31.12.2021) के आधार पर राजकाज में किए गए हिंदी के प्रयोग की स्थिति की समीक्षा की गई।

छमाही प्रगति प्रतिवेदनों की समीक्षा :

छमाही प्रगति प्रतिवेदनों की समीक्षा की शुरुआत सभी सदस्य कार्यालयों को बधाई देते हुए की गई क्योंकि सभी सदस्य कार्यालयों ने राजभाषा नियम-5 की शत प्रतिशत अनुपालना की थी। आगे हिंदी अधिकारी ने बताया कि कुल 61 सदस्य कार्यालयों में से 50 कार्यालयों से छमाही प्रतिवेदन प्राप्त हुए।

राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार “क” व “ख” क्षेत्र में प्रेषित किये जाने वाले हिंदी में मूल पत्राचार का 100 प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित है। इसमें “क” क्षेत्र में सत्रह कार्यालयों द्वारा 99 प्रतिशत से ऊपर एवं 100 प्रतिशत तथा “ख” क्षेत्र में चौदह कार्यालयों द्वारा 100 प्रतिशत लक्ष्य की प्राप्ति की गई। शेष सदस्य कार्यालयों को “क” व “ख” क्षेत्र में प्रेषित किये जाने वाले हिंदी में मूल पत्राचार का निर्धारित 100 प्रतिशत के लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयासरत रहना होगा। “ग” क्षेत्र में जहाँ पत्राचार का लक्ष्य 65% है, एक कार्यालय ने लक्ष्य प्राप्त नहीं किया तथा “ग” क्षेत्र में ही इक्कीस कार्यालयों ने कोई भी पत्र जारी नहीं किया। शेष सभी कार्यालयों ने लक्ष्य प्राप्त किया है।

हिंदी टिप्पण लेखन में 75 प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित है। सात कार्यालयों को छोड़कर शेष ने



निर्धारित लक्ष्य प्राप्त किये हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार प्रत्येक तिमाही में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की एक बैठक एवं छमाही में दो बैठकों का आयोजन किया जाना आवश्यक है परन्तु पांच कार्यालयों द्वारा छमाही के दौरान एक भी विभागीय तिमाही बैठक का आयोजन नहीं किया गया तथा छः कार्यालयों ने छमाही के दौरान एक ही तिमाही विभागीय बैठक का आयोजन किया है। इसके साथ ही प्रत्येक तिमाही में एक तथा छमाही में दो पूर्ण दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाना आवश्यक है किंतु इसके अंतर्गत पन्द्रह कार्यालयों द्वारा इस छमाही में एक भी कार्यशाला आयोजित नहीं की गई और ग्यारह कार्यालयों द्वारा केवल एक ही कार्यशाला का आयोजन किया गया।

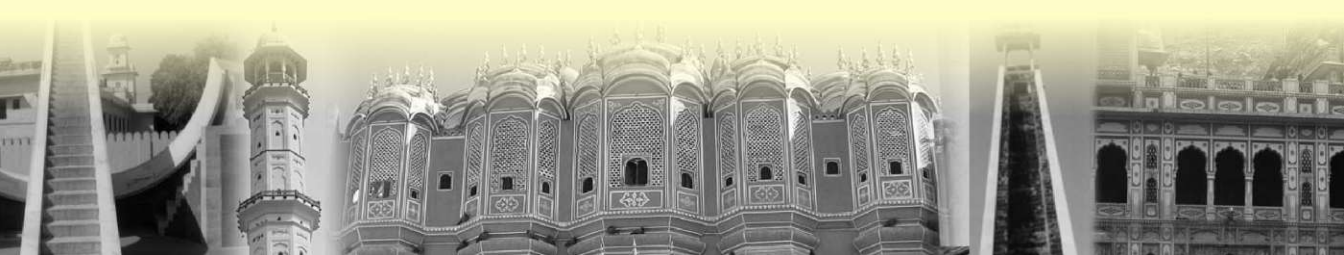
राजभाषा प्रतिनिधि का संबोधन एवं सदस्य कार्यालयों के समस्या/सुझाव पर टिप्पणी :

सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) एवं राजभाषा विभाग (नई दिल्ली) प्रतिनिधि, श्री नरेंद्र सिंह मेहरा ने अपने वक्तव्य की शुरुआत, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर के कार्यों की प्रशंसा से की और इसके लिए उन्होंने नराकास अध्यक्षा, सचिव एवं कार्यालय के कार्मिकों के हिंदी के प्रति निष्ठा व समर्पण को बताया। उन्होंने कहा कि कोरोना काल में भी यह अध्यक्षीय कार्यालय काम के प्रति पूर्णतया से समर्पित रहा। छमाही बैठकों से संबंधित समस्त कार्य समय पर पूर्ण दक्षता के साथ किए जा रहे हैं। नराकास (का-1) जयपुर अन्य नराकास समितियों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत करता आ रहा है। इनकी कार्यप्रणाली को देख कर यह स्पष्ट है कि परिस्थितियां चाहे कैसी भी हों यदि काम के प्रति लगन व निष्ठा है तो लक्ष्य प्रतिपूर्ति में कोई भी रुकावट नहीं आती। इसके लिए एक ओर तो कार्मिकों का काम के प्रति समर्पण दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर इस अध्यक्षीय कार्यालय के कार्यालय प्रधान का सशक्त निर्देशन भी अहम भूमिका निभाता है तभी परिणाम इस तरह से बेहद प्रशंसनीय सामने आते हैं।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने “हिंदी शिक्षण योजना” के अन्तर्गत दिए जाने वाले प्रशिक्षणों के बारे में जानकारी के अन्तर्गत बताया कि इसमें “पारंगत” प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्ष 2021-22 से शुरू किया गया है, इसके अन्तर्गत वे कार्मिक प्रशिक्षण हेतु नामांकन करवा सकते हैं जो हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान तो रखते हैं लेकिन अभी “प्रवीणता” प्राप्त नहीं हैं।

आगे उन्होंने कहा कि सदस्य कार्यालयों को नियमों की पालना आवश्यक रूप से सुनिश्चित करनी होगी और मुझे खुशी है कि इस बार राजभाषा नियम-5 की अनुपालना सभी सदस्य कार्यालयों ने की है, इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं। साथ ही उन्होंने राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3 (3) की अनुपालना भी आवश्यक रूप से सुनिश्चित करने को कहा है। इसमें जिन कार्यालयों ने पालना सुनिश्चित नहीं की, उन्हें तथा सभी को भविष्य में आवश्यक रूप से अनुपालना सुनिश्चित करने हेतु कहा।

आगामी बैठक में उन्होंने सदस्य कार्यालयों में से किन्ही दो इच्छुक एवं राजकाज में सर्वाधिक कार्य



करने वाले सदस्य कार्यालयों से राजकाज में हिंदी के अपने कार्यालय में गत छमाही में प्रयोग सम्बन्धी कम से कम 5 मिनट का पावर प्वाइन्ट प्रजन्टेशन देने हेतु कहा, जिससे दूसरे सदस्य कार्यालय उसको देखकर प्रेरित हो सकें।

अपने वक्तव्य का समापन उन्होंने अध्यक्षीय कार्यालय के कुशल अध्यक्षीय दायित्व के निर्वहन की प्रशंसा से किया और अध्यक्ष महोदया को पुनः हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद दिया।

हवामहल पत्रिका:

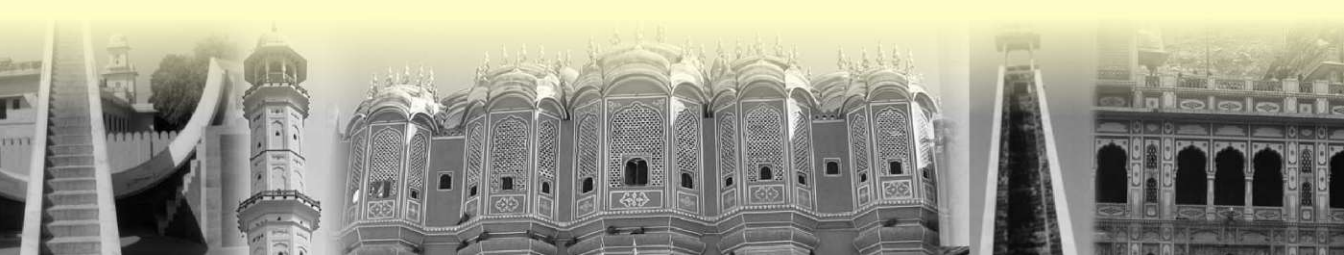
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की वार्षिक हिंदी पत्रिका “हवामहल” का नियमित प्रकाशन हो रहा है। आगामी 10वां अंक (वर्ष 2021-22) प्रकाशनाधीन है।

हिंदी शिक्षण योजना :

हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत बताया गया कि हिंदी भाषा प्रशिक्षण का एक पूर्णकालिक केंद्र जनवरी, 2015 से अध्यक्षीय कार्यालय, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जनपथ, जयपुर में संचालित है। इसका संचालन गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा पदस्थापित हिंदी प्राध्यापक, श्री राजेश मीना द्वारा किया जा रहा है। इस केंद्र के सर्वकार्यप्रभारी अधिकारी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) श्री सोहन लाल साहू हैं। इस केंद्र में जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालयों/बैंको/निगमों/उपक्रमों के अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। हिंदी भाषा के विभिन्न पाठ्यक्रमों में माह जनवरी, 2022 से मई, 2022 तक चलाए जा रहे ऑनलाईन प्रशिक्षण में 114 प्रशिक्षणार्थियों का नामांकन किया जा चुका है तथा नामांकन की प्रक्रिया अभी भी जारी है।

अध्यक्षीय सम्बोधन :

अध्यक्ष महोदया श्रीमती अर्चना गुर्जर, जिन्होंने कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) राजस्थान, जयपुर के कार्यालय प्रधान एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर के अध्यक्ष का कार्यभार दिनांक 14 अक्टूबर, 2021 से संभाल लिया है, ने अपने वक्तव्य की शुरुआत सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुख/प्रशासनिक प्रधान/ प्रतिनिधिगण, राजभाषा प्रतिनिधि एवं सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री नरेंद्र सिंह मेहरा एवं नये नराकास सदस्य कार्यालय, राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (क्षेत्र संकार्य प्रभाग) उत्तरी अंचल, जयपुर के स्वागत से की। अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने उन कार्यालयों को बधाई दी जिन्होंने, “क” व “ख” क्षेत्र में जहां पत्राचार का लक्ष्य 100 प्रतिशत है, 99-100 प्रतिशत के मध्य लक्ष्य हासिल किया तथा “ग” क्षेत्र में जहां 65% लक्ष्य निर्धारित है, उसमें भी लक्ष्य प्राप्ति वाले कार्यालयों को बधाई दी। अन्य कार्यालयों को प्रेरित/प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा



कि यदि हम छमाही प्रतिवेदन के आकड़ों के पिछले प्रदर्शन से हमेशा बेहतर करने में प्रयासरत रहेंगे तो एक ओर तो हमें आत्म संतुष्टि होगी वहीं दूसरी ओर भविष्य में लक्ष्य प्राप्ति निश्चित ही होगी।

आगे उन्होंने कहा कि मेरा ऐसा मानना है कि राजकाज में हिंदी के प्रयोग में कठिनाई नहीं आनी चाहिए क्योंकि राजस्थान एक हिंदी भाषी राज्य है और जयपुर में हिंदी बेहद प्रचलित है। हमें हमेशा राजकाज में सरल और सहज हिंदी का प्रयोग करना है और अपने व्यक्तिगत कार्यों में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है और गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग का भी यही मानना है।

छमाही प्रतिवेदन के बारे में बात करते हुए उन्होंने निर्देशित किया कि छमाही प्रतिवेदन भिजवाना बेहद जरूरी है, इनकी शत प्रतिशत समयानुसार प्राप्ति बेहद आवश्यक है लेकिन इसमें भी कुछ कार्यालय प्रतिवेदन नहीं भिजवाते हैं। इस बार 61 सदस्य कार्यालयों में से 50 सदस्य कार्यालयों से ही छमाही प्रतिवेदन प्राप्त हुए हैं।

उन्होंने नियमों की पालना सहित छमाही प्रतिवेदन को आवश्यक रूप से भिजवाने एवं बैठकों में कार्यालय प्रमुख/प्रशासनिक प्रधान की उपस्थिति सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया।

अगली बैठक की तिथि की घोषणा :

अध्यक्ष महोदया ने राजभाषा प्रतिनिधि, सचिव एवं उपस्थित अन्य सभी सदस्यों की सहमति से नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की अगली 83वीं अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 18 अगस्त, 2022 (बृहस्पतिवार) को आयोजित किए जाने की घोषणा की।

अन्त में सभी सहभागियों का, इस बैठक को सफल बनाने के लिए श्री सोहन लाल साहू, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) एवं सचिव नराकास (का-1) जयपुर द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।



नराकास (का-1) जयपुर के विभिन्न सदस्य कार्यालयों से प्राप्त हिन्दी समारोह-2021 की रिपोर्ट

हिन्दी दिवस समारोह-2021

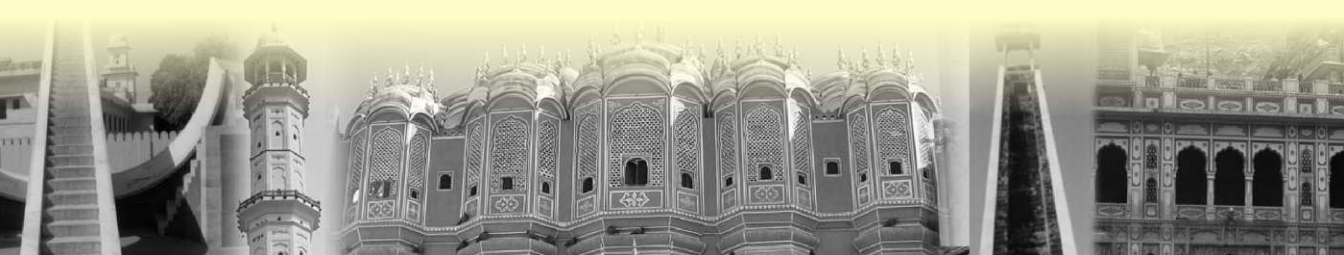
कार्यालय महालेखाकार परिसर में स्थित चारों कार्यालयों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा समारोह की रिपोर्ट

महालेखाकार भवन में स्थित चारों कार्यालयों - कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) राजस्थान, जयपुर, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-11) राजस्थान, जयपुर एवं कार्यालय प्रधान निदेशक (केंद्रीय) शाखा कार्यालय जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14.09.2021 से 28.09.2021 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया। जिसका शुभारंभ दिनांक 14.09.2021 को तथा समापन दिनांक 28.09.2021 को उच्चाधिकारियों द्वारा किया गया।

पखवाड़े की शुरुआत दिनांक 14.09.2021 को हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यालय परिसर में हिंदी की सुक्तियों के पोस्टर, बैनर डिजिटल डिस्ट्रे लगाकर तथा माननीय गृह मंत्री जी के राजभाषा संदेश का वाचन एवं राजभाषा प्रतिज्ञा दिलवाई गई तथा चारों कार्यालयों के प्रत्येक अनुभाग को राजभाषा संदेश व राजभाषा प्रतिज्ञा ई-मेल से भी भिजवाई गई। दिनांक 15.09.2021 से 23.09.2021 के मध्य हिंदी टिप्पण-प्रारूपण, हिंदी लघुकथा लेखन, हिंदी स्व-रचित कविता लेखन, हिन्दी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता एवं हिंदी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें चारों कार्यालयों के प्रतिभागियों ने बेहद उत्साह से भाग लिया।

समापन समारोह का प्रारम्भ दिनांक 28.09.2021 को कार्यालय प्रधानों की अध्यक्षता में माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं उनके चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन से किया गया और साथ ही माँ सरस्वती की वंदना भी की गई।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह दिनांक 28.09.2021 को कोविड-19 के संबंध में जारी गाईडलाइन के अनुसार बहुत ही संक्षिप्त स्तर पर आयोजित किया गया जिसमें प्रतियोगिता के विजेताओं एवं चारों कार्यालयों के उच्चाधिकारी ही सम्मिलित हुए। माननीय कार्यालय प्रधानों द्वारा प्रतियोगिता के समस्त विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत चयनित कार्मिकों को भी पुरस्कृत किया गया तथा सभी विजेताओं को प्रशस्ति-पत्र भी प्रदान किए गए।



हिन्दी पर्यवाड़ा-2021 के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताएं एवं उनके परिणाम

क्र.	प्रतियोगिता	निर्णायक	प्रथम	द्वितीय	तृतीय
		श्री/श्रीमती/सुश्री	श्री/श्रीमती/सुश्री	श्री/श्रीमती/सुश्री	श्री/श्रीमती/सुश्री
1.	हिन्दी स्व रचित काव्य पाठ प्रतियोगिता	रजनीश शर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी रीतिका मोहन हिन्दी अधिकारी विपुल गुप्ता सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	मनोज कुमार एम.टी.एस.	कैलाश आडवानी पर्यवेक्षक	हनुमान गुप्ता सहायक लेखाधिकारी
2.	हिन्दी में कम्प्यूटर पर यूनिकोड में कार्य प्रतियोगिता	जयसिंह रैगर वरिष्ठ लेखाधिकारी हेमन्त अग्रवाल सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी वीरिन्द्र सिंह सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	सन्तोष बुला सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	अमित सिंघल सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	मोटा राम सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)
3.	हिन्दी लघु कथा लेखन प्रतियोगिता	राजेश चौधरी वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी ओम प्रकाश पारीक सहायक लेखाधिकारी कुलदीप जोशी सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	शिवपाली खण्डेलवाल सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	रवि शंकर विजय सहायक पर्यवेक्षक	रूचि गुप्ता ऑडिट क्लर्क
4.	हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता	मनीष शर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी अरूण कुमार शर्मा वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी अशोक कुमार यादव सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	चौधरी सरोज हनुमान सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)	अमित गोयल वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	अनन्य पंवार वरिष्ठ लेखापरीक्षक



5. हिन्दी	मनोहर लाल मीना	भावना शर्मा	अरूण खाण्डल	भगवान दास
टिप्पण-प्रारूपण	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सहायक लेखापरीक्षा	सहायक लेखापरीक्षा	सहायक लेखापरीक्षा
प्रतियोगिता	बाल कृष्ण शर्मा	अधिकारी	अधिकारी	अधिकारी
	वरिष्ठ लेखाधिकारी			
	रंजना भण्डारी			
	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी			

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से; अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से; प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए; अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ायेंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा! जय हिंद!



सरकारी कामकाज मूल रूप से हिन्दी में करने पर मूल शब्द लेखन प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत पुरस्कृत कार्मिक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर

दो- प्रथम पुरस्कार ₹ 5000/- प्रत्येक को

- | | |
|-------------------------|---------------------------|
| 1. श्री सुभाष चतुर्वेदी | सहायक लेखाधिकारी (आर.टी.) |
| 2. श्री रणवीर सिंह जाट | वरिष्ठ लेखाकार |

तीन- द्वितीय पुरस्कार ₹ 3000/- प्रत्येक को

- | | |
|---------------------------|------------------|
| 1. श्री महेश कुमार शर्मा | लेखाकार |
| 2. श्रीमती हेमलता सोनी | वरिष्ठ लेखाकार |
| 3. श्री हरीश चंद्र गुप्ता | सहायक पर्यवेक्षक |

दो- तृतीय पुरस्कार ₹ 2000/- प्रत्येक को

- | | |
|--------------------|--------------------------|
| 1. श्रीमती विद्या | लिपिक |
| 2. श्री मनोज कुमार | सहायक लेखाधिकारी (तदर्थ) |

दो मूल्यांकन समिति के सदस्य, मानदेय ₹ 1000/- प्रत्येक को

- | | |
|-----------------------|-------------------|
| 1. श्री ईपन टी चेरीयन | वरिष्ठ लेखाधिकारी |
| 2. श्री कैलाश पवार | वरिष्ठ लेखाधिकारी |

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

एक-प्रथम पुरस्कार ₹ 5000/-

- | | |
|----------------------|-----------------------------------|
| 1. श्री गंगाराम खटीक | सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) |
|----------------------|-----------------------------------|

कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

दो-प्रथम पुरस्कार ₹ 5000/-

- | | |
|-----------------------|-----------------------------------|
| 1. श्री मोटा राम | सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ) |
| 2. श्री सीता राम मीणा | सहायक पर्यवेक्षक |

दो- द्वितीय पुरस्कार ₹ 3000/- प्रत्येक को

- | | |
|-------------------|---------------------------|
| 1. श्री शिव भगवान | सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी |
| 2. श्री संजय कोचर | सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी |



भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, जयपुर मण्डल, जयपुर

दिनांक 07 सितम्बर, 2021 से 21 सितम्बर, 2021 तक राजभाषा हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन अधीक्षण पुरातत्वविद् डॉ. प्रवीण सिंह जी द्वारा दिनांक 07.09.2021 को माँ सरस्वती के छायाचित्र पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्ज्वलित करते हुए किया।

इस पखवाड़े के उद्घाटन एवं समापन कार्यक्रम के अतिरिक्त 4 प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। इनमें से 3 लिखित व 1 मौखिक प्रतियोगिता थी। लिखित प्रतियोगिताओं में हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता, हिन्दी टंकण प्रतियोगिता तथा हिन्दी टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन तथा मौखिक में हिन्दी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिनमें कार्यालय के विभिन्न कर्मचारियों ने भाग लिया।

दिनांक 09.09.2021 को हिन्दी निबन्ध प्रतियोगिता से प्रारम्भ किया गया जिसमें 9 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा तीन प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इसमें श्री गोविन्द सिंह मीना को ₹ 1000/- प्रथम, श्री नितिन शर्मा को ₹ 700/- का द्वितीय तथा श्री रामकिशोर तिवारी को ₹ 500/- का तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिनांक 14.09.2021 को हिन्दी टिप्पणी एवं प्रारूप प्रतियोगिता कार्यालय के सभी कर्मचारियों के लिए आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता में 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें से तीन प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के लिए चुना गया। इसमें प्रथम पुरस्कार श्री नितिन कुमार शर्मा को ₹ 1000/- द्वितीय पुरस्कार श्री विश्राम सिंह को ₹ 700/- तथा तृतीय पुरस्कार श्री रघुवीर सिंह को ₹ 500/- प्रदान किये गये।

हिन्दी टंकण प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 16.09.2021 को किया गया। इस प्रतियोगिता में 05 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें प्रथम पुरस्कार डॉ. गोविन्द सिंह मीना को ₹ 1000/-, द्वितीय पुरस्कार श्री मदन मोहन सिंघल को ₹ 700/- तथा तृतीय पुरस्कार श्रीमती अंजू कुमारी मीना को ₹ 500/- का प्रदान किया गया।

मौखिक प्रतियोगिता के रूप में भाषण प्रतियोगिता थी जिसका आयोजन दिनांक 21.09.2021 को किया गया, जिसमें आशु भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इसमें 25 विषयों का चयन कर उनकी चिट बना दी गयी और जिस भी प्रतिभागी के पास जो विषय चिट में मिला उसको उसी विषय पर अपना भाषण देना था। इसमें 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें प्रथम पुरस्कार श्री गोविन्द सिंह मीना को ₹ 1000/- द्वितीय पुरस्कार श्री प्रेम प्रकाश को ₹ 700/- तथा तृतीय पुरस्कार श्री अश्वनी कुमार मीना को ₹ 500/- का प्रदान किया गया।



हिन्दी पखवाड़े का समापन दिनांक 21.09.2021 को किया गया। इसी दिन सभी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किये गये। अधीक्षण पुरातत्वविद् डॉ. प्रवीण सिंह ने अभिष्ट चारों प्रतियोगिताओं के सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए तथा राजभाषा अनुभाग प्रभारी डॉ. गोविन्द सिंह ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हिन्दी पखवाड़े के सफल आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, जयपुर

दिनांक 01 सितम्बर, 2021 से 15 सितम्बर, 2021 तक राजभाषा पखवाड़े का आयोजन किया गया। सार्वजनिक सूचना के लिए कार्यालय के मुख्य द्वार तथा प्रशासनिक तल पर राजभाषा पखवाड़ा-2021 के बैनर प्रदर्शित किए गए। राजभाषा विभाग तथा मुख्यालय द्वारा जारी प्रमुख सुक्तियाँ कार्यालय के प्रमुख स्थानों पर तथा प्रशासनिक कक्षों में प्रदर्शित की गयी। इस दौरान कोविड-19 प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए मुख्यालय द्वारा निर्धारित निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया -

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	आयोजन तिथि	प्रतिभागियों की सं.
1.	हिन्दी निबंध	06.09.2021	15
2.	राजभाषा ज्ञान	07.09.2021	13
3.	हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन	08.09.2021	10
4.	हिन्दी वाक्	09.09.2021	12

कार्यक्रम की शुरुआत पंचदीप प्रज्ज्वलन तथा मां सरस्वती की पूजा अर्चना के साथ की गई। कार्यक्रम के अंत में चिकित्सा अधीक्षक महोदया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि संघ सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन, राजभाषा की उत्तरोत्तर वृद्धि तथा प्रोत्साहन हेतु प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन किया जाता है। सितम्बर माह हर वर्ष हिन्दी के लिए एक नूतन अहसास लेकर आता है। संघ सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन के लिए यह जरूरी हो जाता है कि हम सरकारी कामकाज में हिन्दी के सहज एवं सफल कार्यान्वयन के लिए अधिकाधिक प्रयासरत हों। हमें अधिकाधिक पत्राचार तथा फाइलों पर टिप्पण हिन्दी में करना चाहिए ताकि हम राजभाषा कार्यान्वयन के निमित्त संघ सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को सहजता से प्राप्त कर सकें।

कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा ली गयी। उप चिकित्सा अधीक्षक महोदय द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के उपरान्त राष्ट्रगान कार्यक्रम संपन्न किया गया।

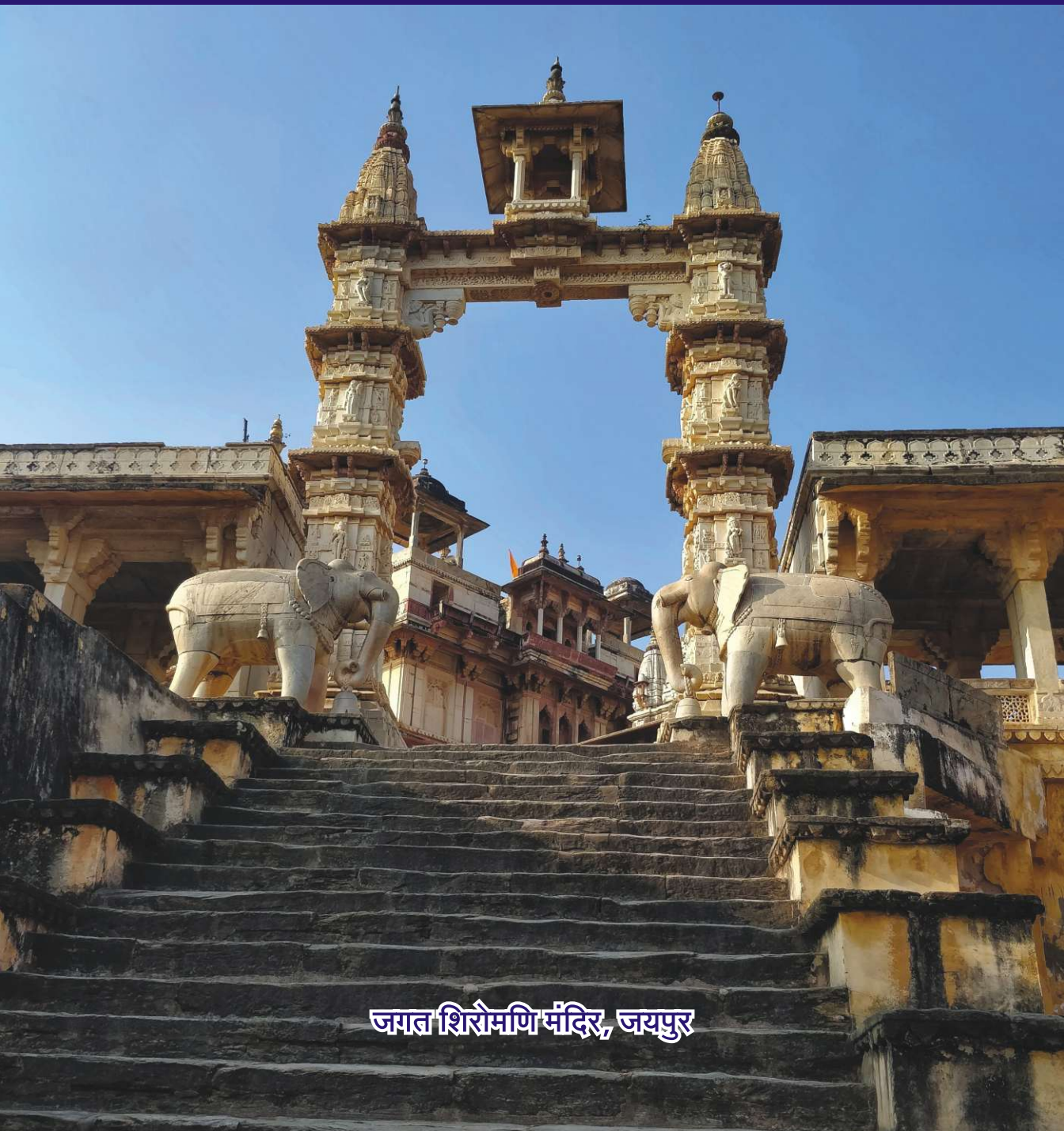


**नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की 82वीं ऑनलाइन (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग)
आयोजित अर्द्धवार्षिक बैठक (दिनांक 31.01.2022) की झलकियाँ**



**नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का-1) जयपुर की 81वीं ऑनलाइन (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग)
आयोजित अर्द्धवार्षिक बैठक (दिनांक 26.08.2021) की झलकियाँ**





जगत शिरोमणि मंदिर, जयपुर